प्रेमचन्द और फकीर मोहन सेनापति के उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन

('गोदान' और 'छअँ माणँ आठ गुंठ')

एम. फिल. उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध

1984

दिर्देशक

डॉ० बी० एम० चिन्तामणी

शोध छात्रा

निवेदिता साहु

भारतीय भाषा केन्द्र

भाषा संस्थान

जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय

नई दिल्ली-110067

JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY

भारतीय भाषा केन्द्र

Gram : JAYENU

Telephone : 652282
652114

New Mehrauli Road,
NEW DELHI-110067.

दिनांक 20-7-1984

यह प्रमाणित किया जाता है कि कुमारी निवेदिता साहू द्वारा प्रस्तुत "प्रेमचन्द और फकीर मोहन सेनापति का तुलनात्मक अध्ययन (गोदान और छः माण आठ गुंठ)" शीर्षक लघु-शोध-प्रबंध में प्रयुक्त सामग्री का इस विश्वविद्यालय अथवा अन्य विश्वविद्यालय में इसके पूर्व किसी भी प्रदेय उपाधि के लिए उपयोग नहीं किया गया है । यह सर्वथा मौलिक है ।

(नामवर सिंह)
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
भारतीय भाषा केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110067

(डी० एम० चिन्तामणि)
शोध-निर्देशक
भारतीय भाषा केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110067

भूमिका

भारतीय उपन्यास की विकास परंपरा में फकीर मोहन का उड़ीया उपन्यास 'छअ माण आठ गुंठ' (1897) और प्रेमचंद का हिन्दी उपन्यास 'गोदान' (1936) एक दूसरे की वस्तुगत एवं शिल्पगत समीपता के कारण, किसी प्रत्यक्ष सम्पर्क के न होते हुए भी ; तुलनात्मक अध्ययन की महत्वपूर्ण आधारशिला बनते हैं ।

देश और काल के संदर्भ में 'छअ माण आठ गुंठ' और 'गोदान' में मात्र इतना ही साम्य है कि दोनों ही भारतीय शोषित कृषक वर्ग की कहानी कहते हैं । ऐतिहासिक यथार्थ की सापेक्षता में इन दोनों उपन्यासों का यान्त्रिक अवलोकन इस तुलनात्मक अध्ययन को अप्रासंगिक ठहरा सकता है । परन्तु विशिष्ट पात्रों की परिकल्पना और उनकी मानसिकता के आधार पर उपन्यास का वस्तु-विन्यास जिस विश्वदृष्टि को हमारे सामने लाता है वह दोनों उपन्यासों के तुलनात्मक अध्ययन की मूलभूत अनिवार्यता को स्पष्ट कर देती है ।

उपरोक्त आधार पर ही इस लघु-शोध-प्रबंध को चार अध्यायों में बाँटा गया है । प्रथम अध्याय में फकीर मोहन और प्रेमचंद के समसामयिक सामाजिक यथार्थ का विश्लेषण किया गया है । इस विश्लेषण के अन्तर्गत मुख्य रूप से 'गोदान' की रचना प्रक्रिया के समय चलने वाली किसान आंदोलन और नयी पीढ़ी की उस सामाजिक चेतना को सामने रखा गया है जो

'छः माणि आठ गुंठ' के रचनाकाल में भारतीय किसान से बहुत दूर थी। ऐसा होते हुए भी हम देखते हैं कि भगिया और होरी की सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों में कोई विशेष अन्तर नहीं है और उनकी मानसिकता का विकास धर्मभीरु किसान के शोषण की समान विडम्बनाओं में होता है।

दूसरे अध्याय में फकीर मोहन और प्रेमचंद के पूर्व की उपन्यास परंपरा का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन से हमारे समक्ष स्पष्ट हो जाता है कि परंपरा अथवा पृष्ठभूमि के रूप में मात्र विचारधारा के स्तर पर एक परिवर्तन फकीर मोहन से प्रेमचंद तक मूर्त रूप ग्रहण करता हुआ दिखाई देता है। जहाँ तक सामाजिक परिवर्तन का प्रश्न है वहाँ यह स्पष्ट रूप में कहा जा सकता है कि इस बीच ऐसा कुछ भी घटित नहीं हुआ था जिसे आर्थिक संबंधों के आधार पर इतिहास का नाम दिया जा सके।

तीसरे और चौथे अध्याय में कथावस्तु और शिल्पगत समानताओं के आधार पर 'छः माणि आठ गुंठ' और 'गोदान' का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, जिसके निष्कर्ष रूप में हम पाते हैं कि शोषित किसान का जीवन चित्रण भारतीय भाषाओं के उपन्यासों में फकीर मोहन से अपना सफर शुरू करता है और प्रेमचंद तक अति-अति शोषण और उसके उत्पीड़न की गहराई को समग्रता में प्रतिबिंबित करने में सक्षम हो जाता है। दोनों ही लेखकों में समसामयिक यथार्थ को निहीह शोषित किसान की दृष्टि से पहचाना गया है और उन्हीं की सरलता और सजीवता के साथ उसे चित्रित किया

गया है।और वह 'कर्ज मणि आठ गुंठ' का भगिया हो या 'गोदान' का होरी अपने अन्तर के सुरदी स्पर्श से हर चीज को छूकर महसूसता हुआ देश और काल की सीमाओं का अतिक्रमण करता है।

इस तुलनात्मक अध्ययन में दिशा निर्देश के लिए मैं डा०बी०एम० चिन्तामणि के प्रति विशेष आभार प्रकट करती हूं। उनका निर्देशन और प्रोत्साहन मेरे लिए हमेशा स्मृति और गौरव का विषय रहेगा। मेरे इस तुलनात्मक अध्ययन की समझ-बूझ का विकास प्रोफेसर नामवर सिंह और भारतीय भाषा केन्द्र के अन्य अध्यापकों की अनुकम्पा और अध्यापन से हुआ है, जिसके लिए मैं उनकी अनुग्रही हूं।

निवेदिता साहु

निवेदिता साहु

दिनांक 20-7-1984

नई दिल्ली

विषय-सूची

प्रथम अध्याय	:	प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति के उपन्यास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ।	1 -12
द्वितीय अध्याय	:	प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति के संदर्भ में हिन्दी और उड़िया उपन्यास परंपरा ।	13 -32
तृतीय अध्याय	:	विषय-वस्तु की दृष्टि से 'गोदान' और 'छअ माण आठ गुंठ' का तुलनात्मक अध्ययन ।	33 -65
चतुर्थ अध्याय	:	औपन्यासिक कला की दृष्टि से 'गोदान' और 'छअ माण आठ गुंठ' का तुलनात्मक अध्ययन ।	66 -89
	:	उपसंहार ।	90 -95
	:	संदर्भ ग्रंथ सूची ।	96 -98

प्रथम अध्याय

प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति के उपन्यास की

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्रथम अध्याय

प्रायः कहा जाता है कि 'साहित्य समसामयिक समाज का एक मूर्तिमन्त प्रकाश है। देश-काल-पात्र निर्विशेष में जगत के प्रत्येक साहित्य के संबंध में यह उक्ति सत्य है। यही कारण है कि सामाजिक-व्यवस्था में जब परिवर्तन आता है, उससे लेखक के विचार और दृष्टिकोण में परिवर्तन आता है। फलतः साहित्यिक संरचनाओं में भी परिवर्तन आता है। प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति के उपन्यास तथा उनके पूर्ववर्ती उपन्यासों में जो प्रवृत्तिगत भिन्नता दिखाई देती है'— इसी बात का दृष्टान्त है। लेखक अपने युग की देन होने के कारण दोनों उपन्यासकारों ने अपने युग की सच्चाई को देखा और परखा था। उनके उपन्यासों से भी स्पष्ट होता है कि उनका उपन्यास केवल मनोरंजन के उद्देश्य से नहीं लिखा गया था, अपितु समसामयिक समाज की छोटी-सी घटनाओं, समस्याओं से परिपूर्ण है। अतः प्रेमचंद और फकीर मोहन के उपन्यास का विश्लेषण करने से पहले हमें उस युग और समाज की बुनियादी सत्यों की ओर दृष्टिपात कर लेना चाहिए जो उनके उपन्यास की बनावट के मूल में निहित है।

प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई, सन् 1880 ई० का लमही गाँव में हुआ था। प्रेमचंद ने अपनी पहली रचनाओं के बारे में लिखा —'उपन्यास

तो मैंने 1901 ही में लिखना शुरू कर दिया था। मेरा एक उपन्यास 1902 में निकला और दूसरा 1904 में।''[1] 'गोदान' उनका अंतिम पूर्ण उपन्यास है, जिसका प्रकाशन 1936 ई० में हुआ था। फकीर मोहन का जन्म मल्लिकाशपुर नामक गाँव में जनवरी 1843 ई० को हुआ। इनका औपन्यासिक जीवन प्रारंभ होता है ''छअ माण आठ गुंठ' से। पुस्तकाकार रूप में इसका प्रकाशन सन् 1902 ई० में होता है। अतः 'गोदान' और 'छअ माण आठ गुंठ' के उचित मूल्यांकन के लिए फकीर मोहन काल से प्रेमचंद युग (1936) तक की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों का अध्ययन करना आवश्यक है।

1898

राजनैतिक परिस्थिति

सन् 1803 ई० में अंग्रेजों ने उड़ीसा पर अधिकार किया था किन्तु 1804 ई० में ही अंग्रेजीशासन के विरुद्ध उड़ीसा में विद्रोह की ज्वाला जल उठी थी। कृष्णचन्द्र राजगुरु को विद्रोही नेता स्वरूप मिदिनापुर के राजपथ में फाँसी दी गयी थी। सन् 1817-18 ई० में सेनापति बक्सि जगबन्धु विद्याधर के नेतृत्व में समग्र उड़िया जाति ने ब्रिटिश-शासन के विरुद्ध विद्रोह किया था। ब्रिटिश शासकों ने इसका दमन अत्यन्त कठोर ढंग से किया था। उड़ीसा के सिपाही-सम्प्रदाय को निरस्त कर दिया गया।

---

1. मदन गोपाल - कलम का मजदूर प्रेमचन्द - पृ 38 से उद्धृत

साथ ही युग-युग से उन्हें राजाओं की तरफ से जो निष्कर जमीन मिली थी, उसे भी छीन लिया गया । उसके परिणामस्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जनता में जो राजनैतिक चेतना दिखाई दी थी, वह दमित हो गयी ।

उस समय बंग-देश का एक अप्रधान अंग रूप में उड़ीसा को स्थान मिला था । कटक, पुरी और बालेश्वर को उड़ीसा कहा जाता था । इन तीन क्षेत्रों को छोड़कर बंगाल तथा अन्य प्रदेशों में रहने वाले उड़िया भाषा-भाषियों का उड़ीसा से कोई संबंध नहीं था । अतः उड़िया-भाषियों के सम्मुख जो मुख्य समस्या थी वह ये थी कि – सम्पूर्ण उड़िया भाषा-भाषी क्षेत्रों को एकत्रित कर, उसे एक शासन में अन्तर्भुक्त करना, दूसरी, उड़िया भाषा और साहित्य की उन्नति करना । इस दृष्टि से यद्यपि 1870 ई० से 1900 ई० के बीच अनेक सांस्कृतिक अनुष्ठानों की प्रतिष्ठा हुई थी, उनका राजनीति से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं था । उड़िया-भाषियों का राजनीति में अंश ग्रहण न करने का एक दूसरा कारण भी था । राजनीतिक चेतना, या जन-जागरण के लिए जिस तरह देश में शिक्षा प्रचार होना चाहिए था, उड़ीसा में उस शिक्षा का अभाव था ।

सन् 1900 ई० के बाद का युग साहित्यिक क्षेत्र में प्रेमचंद का युग है । यह भारतीय जनता के राष्ट्रीय संघर्ष का युग है । इस

सम्य साम्राज्यवादी ब्रिटिश राज्य से पराधीन भारत को मुक्ति कराने की आकांक्षा तीव्र होती है । सन् 1917 ई० में प्रथम महायुद्ध के दौरान रूसी-क्रान्ति हुई । वहाँ की शासन-सत्ता जार के पास से छटकर किसानों और मजदूरों के हाथ में आ गयी । धीरे-धीरे इस घटना का प्रभाव अन्य देशों पर पड़ा । समयानुसार भारतीय किसान और मजदूर भी उससे प्रभावित हुए । अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए किसान -मजदूरों का संगठन बनता है और वे आन्दोलनों में हिस्सा लेते हैं । अंग्रेजी सरकार लोगों की विद्रोह-भावना को दबाने के लिए दिन-प्रतिदिन कठोर कानून और दमन-नीति का प्रयोग करने लगी । इस समय रौलट-बिल (1919), एक्टर-कमिशन (1920), हिन्दु-मुस्लिम दंगों को शान्त करने के लिए निर्मित 1927 का साइमन - कमिशन, 1930 ई० के नमक-कानून भंग के साथ सविनय आन्दोलन, हड़ताल, विद्रोह आदि राजनीतिक कार्य क्रियात्मक रूप से होने लगे । इन विषम परिस्थितियों के बीच कांग्रेस के नेतृत्व में भारतीय जनता स्वाधीनता के लिए संघर्ष कर रही थी । दूसरी तरफ शासन-व्यवस्था में भ्रष्टाचार व्याप्त था । पुलिस-विभाग, न्यायालय आदि सभी क्षेत्रों में घूसखोरी और भ्रष्टाचार दिखाई दे रहा था । कहने का अभिप्राय यह है कि ब्रिटिश-शासन के अत्याचार, दमन व दोहरी नीति से देश तबाह हो रहा था और यही प्रेमचंद का युग भी था । अतः अपने समसामयिक

राजनीतिक परिस्थिति में होने वाले परिवर्तन को प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में अभिव्यक्ति प्रदान की है ।

सामाजिक परिस्थिति

भारत में ब्रिटिश-शासन को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से अंग्रेजों ने नई शिक्षा-पद्धति शुरू की । भारत में आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति के निर्माता मेकाले ने अपनी शिक्षा विषयक पुस्तक में लिखा है —'' We must do out best to form a class who may be interpreters between us and the millions whom we govern, a class of persons Indian in blood and colour but English in taste and opinion."

अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति के माध्यम से भारतीय, पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के सम्पर्क में आने से समाज में एक नवीन शिक्षित वर्ग का उदय हुआ । इस वर्ग से अनेक लोग अंग्रेजों का अन्धानुकरण कर रहे थे । वे भारतीय सभ्यता और संस्कृति को तिलांजलि देकर कुछ दुराचार अंग्रेज कर्मचारियों के अनुरूप अर्थात् वेश्या और मदिरापान जैसे दुर्व्यसनों को अपने जीवन का सर्वस्व समझ रहे थे । दूसरी ओर समाज में अशिक्षित ग्रामीण लोगों का एक दूसरा

वर्ग था । यह वर्ग अनेक प्रकार के धार्मिक अंधविश्वासों, प्राचीन रूढ़ियों में जकड़ा हुआ था और आत्मरक्षा में असमर्थ हो चुका था । यह वर्ग अंग्रेजी शासन के भीतर असहनीय गरीबी और पराधीनता का त्रास भोग रहा था । इस प्रकार उस युग का समाज दो वर्गों में विभाजित था । पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव से इस देश के सामाजिक जीवन में जो अव्यवस्था दिखाई दे रही थी, उससे इस देश के बुद्धिजीवियों के समक्ष एक जटिल समस्या पैदा हो गई थी । उन्होंने अनुभव किया कि इस समस्या का समाधान वैज्ञानिक तथा तर्कसंगत दृष्टिकोण को अपनाने से ही संभव हो सकता है । परिणामस्वरूप 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में तत्कालीन जर्जरित एवं रूढ़िग्रस्त समाज के भीतर सुधार के लिए इस वर्ग द्वारा प्रयत्न किये जाने लगे । 19वीं शताब्दी के आरंभ में राजा राममोहन राय और इसके मध्य में स्वामी दयानंद सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, रानाडे और गोखले आदि समाज-सुधारकों के नेतृत्व में ब्रह्म-समाज, आर्य-समाज और प्रार्थना-समाज आदि की स्थापना हुई ।

बंगाल में समाज-सुधार की दिशा में ब्रह्म-समाज का अत्यधिक योगदान रहा है । इसके संस्थापक राजा राममोहन राय ने तत्कालीन समाज के भीतर अपने सिद्धान्तों के द्वारा एक नई जागृति पैदा की । इसी

प्रचार हिन्दी भाषी क्षेत्र में आर्य-समाज के सिद्धान्तों का अत्यधिक प्रभाव पड़ा । लोगों में बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, अशिक्षा, मदिरापान जैसे कुसंस्कारों से मुक्ति प्राप्त करने की चेतना पैदा हुई । फकीर मोहन और प्रेमचंद के समय तक ब्रह्म-समाज और आर्य-समाज का प्रचार हो चुका था । फकीर मोहन ब्रह्म-समाज से प्रभावित थे । उन्होंने सर्वोदय बालेश्वर में ब्रह्म उपासना मंदिर की स्थापना की । प्रेमचंद आर्य-समाज से प्रभावित थे । दोनों उपन्यासकारों ने अपने युगानुरूप समाज में व्याप्त कुरीतियों और अंधविश्वासों पर अपने उपन्यासों में व्यंग्य किया है और समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास किया है ।

आर्थिक स्थिति

फकीर मोहन और प्रेमचंद के रचनाकाल और उससे पूर्ववर्ती युग भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की प्रतिष्ठा और अखण्ड आधिपत्य का युग था । इस युग में भारत का अंग्रेजों ने अत्यधिक आर्थिक शोषण किया । इसलिए वस्तुतः यह भारत की पराधीनता का इतिहास है । उस युग में देश की अर्थ-व्यवस्था का आधार-स्तम्भ कृषि और उद्योग-धंधे थे । वस्तुतः कृषि और उद्योग किसी देश के आर्थिक विकास के मूल आधार होते हैं ।

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति हो चुकी थी। आधुनिक पूंजीवादी शोषण को संरक्षण देने वाले अंग्रेजों ने सर्वप्रथम भारत के हाथ-कर्घा और अन्य उद्योग-धंधों को ध्वंस करते हुए यहाँ की कृषि-व्यवस्था को छिन्न-भिन्न कर दिया। अंग्रेज भारत को अपने व्यापार को एक अच्छा संरक्षित क्षेत्र समझते थे और यहाँ से कच्चा माल निर्यात करके इंग्लैण्ड से मशीन की बनी हुई चीजें लाकर भारत में सस्ते दामों पर बेचते थे। फलस्वरूप भारत के परंपरागत उद्योग-धंधों का विकास एकदम रुक गया और भारत की पूंजी ब्रिटेन में जाने लगी। भारत की इस आर्थिक दुरावस्था ने साहित्यकारों का भी ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। फकीर मोहन ने लिखा है —

ओलि तलि लुग कोटिए मण

आउ मोह क्या शुण

बोइले कि हेब बाप्पाबु हेब

लिभरपुल रु लुग।

मचिष्टर तन्ती बुणा लुगुकन्ति

लुम्ममानकं सकारी

बुढु तन्ती थेबा हेउ सर्वनाश

जाआन्तु से बनवासी।

स्वदेश र शिल्प सबु अत्प अत्प

देखुक जाउबि बुढ़ि

देखु नांह भालि सरूबि संभाली

शोश्व माठटि बोढ़ि'' । (अक्सर वासी)

ब्रिटिश-शासन काल में केवल उद्योग-धंधों के ही ह्रास के से देश की आर्थिक-स्थिति में सन्तुलन डगमगा गया था, यह बात नहीं थी। वरन् उसकी भू-व्यवस्था से भी देश का आर्थिक ढांचा चरमरा गया था। ब्रिटिश-शासन से पूर्व मुगलों के शासन काल में भारत में भूमि पर गाँव का सामूहिक अधिकार होता था। तत्कालीन सामंत भूमि की उपज के एक निश्चित अंश को प्राप्त करने का अधिकारी मात्र होता था। यह अंश उपज के घटने-बढ़ने के साथ घटता और बढ़ता रहता था, जिसके परिणामस्वरूप किसान और शासक में प्रत्यक्ष संबंध बने रहते थे। लेकिन ब्रिटिश-शासन काल में इस पुरानी प्रथा को खत्म कर दिया गया और नये रूप से भूमि का मूल्य निर्धारित किया गया। अब ब्रिटिश सरकार ने एक निश्चित राशि के रूप में मालगुजारी लेना प्रारंभ किया, जिसका भूमि की उपजाऊ शक्ति से कोई संबंध नहीं था। इस नई व्यवस्था का परिणाम दो स्तरों पर देखा जा सकता है -- एक यह कि इस कानून से भूमि पर व्यक्तिगत स्वामित्व

की प्रथा शुरू हुई, जिसके अनुसार भूमि का व्यावसायिक रूप सामने आया। इसका सीधा अभिप्राय यह था कि व्यक्तिगत अधिकार स्वीकृत होने के बाद व्यक्ति को अपनी भू-सम्पत्ति रुचानुसार बेचने-खरीदने की छूट मिल गई। दूसरी बात यह कि अब जमीन के मालिकों का एक नया वर्ग सामने आया। एक ऐसा वर्ग जिसको ब्रिटिश सरकार ने प्रश्रय देकर अपने साथ मिला लिया था। ब्रिटिश शासन से पूर्व के जमींदार या जागीरदार के समान अब इन नये जमींदारों का कोई ऐतिहासिक या आभिजात्य या खानदानी स्वरूप नहीं रहा। ब्रिटिश सरकार की आज्ञा पालन करने के अलावा इनका कोई सामाजिक दायित्व, न्याय, विचार-बोध नहीं रहा। इन निरंकुश जमींदारों के अधीन रहकर प्रजा अत्यधिक शोषण का शिकार हो रही थी। इस शोषण की प्रक्रिया में मात्र जमींदार ही नहीं थे बल्कि उनके साथ उनके मातहत कारिन्दे, महाजन, विदेशी शासन व्यवस्था के प्रतिनिधि, पुलिस, वकील तथा विभिन्न सरकारी कर्मचारी भी थे, जिनके शोषण-चक्र में साधारण जनता पिस रही थी। इस शोषण-प्रक्रिया में धीरे-धीरे जनता की आर्थिक दशा अत्यधिक खराब हो गयी। स्थिति यहाँ तक पहुँच जाती थी कि लगान चुकाने और अपनी छोटी-से-छोटी आवश्यकता की पूर्ति के लिए उसे गाँव के महाजन या जमींदार की शरण में जाना पड़ता था। इस तरह भारतीय जनता कर्ज के बोझ से बुरी तरह लदी चुकी थी। 'युक्तप्रांत की

विकट स्थिति' शीर्षक से पट्टाभि सीतारमैया ने भारतीय किसान की दशा का चित्रण करते हुए लिखा है —''युक्तप्रांत में विकट परिस्थिति उत्पन्न हो रही थी। ..... युक्तप्रांत में किसानों की, अधिकांशतः तालुकेदारों व जमींदारों के अधीनस्थ किसानों की आर्थिक दशा बहुत खराब हो रही थी।उनकी विपत्ति बढ़ रही थी। लगान-वसूली के तरीकों में नरमी का नाम-निशान न था। ..... बेदखलियों से अनेक ग्रामीण क्षेत्रों में तो किसानों पर आतंक का राज्य हो गया और उनके साथ क्रूरता पर क्रूरता होने लगी।''[1] प्रेमचंद और पकीरमोहन सेनापति ने अपने समय की अर्थ-व्यवस्था का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन किया था। जमींदार और उनके कारिन्दों, महाजनों के हथकण्डों, विदेशी शासन-व्यवस्था की प्रतिनिधि पुलिस, वकील आदि के शोषण चक्र में ग्रामीण किसान किस तरह पिस रहा था, इस बात को दोनों उपन्यासकारों ने अत्यधिक नजदीक से देखा था और उन्होंने अपने उपन्यासों में भारत के गाँवों की आर्थिक दुरावस्था का अत्यधिक सूक्ष्म चित्रण किया है और इन दोनों के उपन्यासों में इस संबंध में काफी समानताएँ पाई जाती है।

प्रेमचंद का युग भारत में औद्योगिक अर्थ-व्यवस्था के विकास का युग है। औद्योगिक विकास के साथ समाज में दो नये वर्ग सामने

1- डा० महेन्द्र भटनागर -समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचंद, पृ०॥ से उद्धृत

अथि - पूंजीपति और मजदूर वर्ग । एक शोषक था और दूसरा शोषित । गांव में किसानों की तरह नगरों में मजदूरों की दशा दिन-प्रतिदिन दयनीय होती जा रही थी । प्रेमचंद ने अपने उपन्यास में पूंजीवादी विकास में मजदूरों की शोचनीय आर्थिक दशा का चित्रण किया है ।

निष्कर्ष

फकीर मोहन और प्रेमचंद के युगों की राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्थितियों का अध्ययन करने के पश्चात हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि - दोनों उपन्यासकारों द्वारा वर्णित सामाजिक, आर्थिक स्थिति में प्रायः समानता पाई जाती है, किन्तु राजनीतिक परिस्थिति की दृष्टि से फकीर मोहन और प्रेमचंद के युग में इसलिए असमानता पाई जाती है क्योंकि दोनों के रचनाकाल में अन्तर है । फकीर मोहन के युग में उड़ीसा में राजनीतिक चेतना का उदय नहीं हो पाया था । राजनीतिक दृष्टि से उड़ीया भाषा-भाषियों के सम्मुख प्रादेशिक समस्या थी । किन्तु प्रेमचंद का युग राजनीतिक सक्रियता का युग था । अतः दोनों के युग की राजनीतिक परिस्थितियों की भिन्नता के कारण, उनका प्रभाव भी भिन्न-भिन्न पड़ा था । इतिहास की इसी पृष्ठभूमि पर फकीर मोहन और प्रेमचंद का उपन्यास साहित्य प्रतिष्ठित है ।

द्वितीय अध्याय

प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति के संदर्भ में हिन्दी और उड़िया उपन्यास परंपरा

द्वितीय अध्याय

हिन्दी तथा उड़िया के उपन्यास-साहित्य क्षेत्र में प्रेमचन्द तथा फकीर मोहन सेनापति का आगमन एक नये मोड़ का सूचक है। दोनों के आगमन से उपन्यास में नया युग प्रारंभ होता है। दोनों उपन्यासकारों का उपन्यास-साहित्य अपने पूर्ववर्ती उपन्यास-साहित्य से भिन्न तथा नवीन प्रतीत होता है। यह नवीनता न केवल विषयवस्तु के स्तर पर देखी जाती है, बल्कि रूपगत विशेषताओं के कारण भी ये नवीन लगते हैं। अब यहाँ प्रश्न उठता है कि ऐसी कौन-सी साहित्यिक विधियों या प्रवृत्तियों का दोनों उपन्यासकारों ने प्रयोग किया है, जिसके परिणामस्वरूप अपने पूर्ववर्ती उपन्यास-परंपरा से नवीन लगते हैं? जब हम 'परम्परा' शब्द का व्यवहार कर रहे हैं तो उसके साथ और भी सवाल उठते हैं। वह ये कि अब उपन्यास-साहित्य का जो विकसित रूप हम देख रहे हैं, क्या वह प्राचीन-काल से भारतीय साहित्य में चली आ रही कथा-परंपरा का ही विकसित रूप है? या विदेशी साहित्य के प्रभावस्वरूप उसका उद्भव हुआ है? विदेशी साहित्य का प्रभाव हिन्दी तथा उड़िया उपन्यास पर सीधे पड़ा या अन्य किसी भाषा के माध्यम से? यह दूसरा और तीसरा सवाल, नवीनता के प्रश्न से जुड़ा हुआ है। क्योंकि किसी भी कृति विशेष में दृष्टिगत

होने वाली नवीनता को रेखांकित करना तभी संभव होगा, जब हम अतीत का पुनर्मूल्यांकन करेंगे । इस दृष्टि से प्रेमचंद तथा फकीर मोहन के उपन्यास की पहली कड़ी के रूप में उनसे पूर्ववर्ती उपन्यास-साहित्य महत्वपूर्ण ठहरता है । अतः यहाँ दोनों भाषाओं की उपन्यास-परंपरा का अध्ययन करना ऐतिहासिक दृष्टि से उपयुक्त ही नहीं आवश्यक भी है ।

यह कहा जाता है कि मानव-जाति के साथ ही कथा-साहित्य का जन्म हुआ है । चाहे भारत में हो या विदेश में मनुष्य की रुचि कथा कहने और सुनने में प्रारंभ से ही रही है । अतः उपन्यास के उद्भव के बारे में दो तरह के मत हैं –

पहला मत यह है कि उपन्यास का मूल प्रेरणा-स्रोत प्राचीन भारतीय साहित्य है । इस मत को स्वीकार करने वालों का कहना है कि कथा-साहित्य का उद्गम स्रोत ऋग्वेद है । इसमें विभिन्न याज्ञिक क्रियाओं द्वारा इन्द्र, वरुण, सविता, मरुत, अग्नि आदि देवताओं के स्तुतिपरक मंत्र संग्रहित हैं । इन्हें संवाद-सूत्र भी कहा जाता है । आगे चलकर इन कथाओं को उपनिषद्, निरुक्त आदि में विस्तार रूप मिलता है । डा० प्रताप नारायण टंडन के शब्दों में –''इस संबंध में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह ध्यान रखने की है कि प्रायः सभी परवर्ती आख्यान ऋग्वेद में बीज रूप में उपलब्ध हैं । इनका विस्तार से वर्णन 'उपनिषद्', 'निरुक्त', 'बृहद्देवता', 'कात्यायन-

सर्वानुक्रमणी' तथा 'पुराण' आदि में मिलता है। × × × × × इन्हीं कथाओं के बृहत् संकलनों के आधार पर भी 'रामायण' तथा 'महाभारत' की भी रचना हुई। महाकाव्यों में जो कथाएँ आयी हैं, उनमें से बहुत सी अपने प्रारंभिक रूप में पहले से ही उपलब्ध थीं। परन्तु कल्पना के आधार पर उन्हें अधिक विस्तार दिया गया तथा इन ग्रंथों में उनको विस्तृत रूप में संग्रहित किया गया।''[1] अतः आधुनिक उपन्यास साहित्य का मूल प्रेरणा-स्रोत यही कथाएँ हैं।

डॉ0 कृष्णचन्द्र बेहेरा का कथन है कि ''उन्नीसवीं शताब्दी बेलकु आम साहित्य रे उपन्यास रचना लागि क्षेत्र प्रस्तुत होइ सारिथिला एवं उपन्यास र विभिन्न लक्षण, उपादान आमर प्राचीन कथा-साहित्य रे प्रकाश लाभ करिथिला। सेथिपाइँ कोला जाइ पारे ये – ओड़िया उपन्यास र उन्मेष ओ उत्तरण-धारा एकान्त भावि स्वदेशीय।''[2]

1- डॉ0 प्रताप नारायण टंडन – हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास, पृ049, संस्करण-74

2- कृष्णचन्द्र बेहेरा – ओड़िया उपन्यास, पृ0 89

दूसरे मत वाले उपन्यास साहित्यको अंग्रेजी साहित्य से प्राप्त प्रेरणा का फल समझते हैं। अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव के संबंध में दो मत हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक भारत में अंग्रेजी शक्ति खूब जम चुकी थी। अब तक अंग्रेजी का उपन्यास साहित्य भी काफी सम्पन्न हो चुका था। हिन्दी तथा उड़ीया के साहित्यकार अंग्रेजी उपन्यासों से अनुवाद तथा उनसे अनुप्रेरित होकर उपन्यास लिखने लगे थे। हिन्दी में अंग्रेजी उपन्यासों के कुछ अनुवाद देखने में आये - जैसे रेनल्ड्स कृत 'लैला' और 'लंदनरहस्य', अंग्रेजी के प्रसिद्ध उपन्यास 'टाम काका की कुटिया' का भी अनुवाद हुआ।[1] उड़ीया के कवि राधानाथ राय ने 'इतालीय युवा' (सन् 1874) अंग्रेजी साहित्य से अनुप्रेरित होकर लिखा था।[2] यही कारण है कि कुछ आलोचकों ने उपन्यास पर अंग्रेजी साहित्य का प्रत्यक्ष प्रभाव माना है।

1- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ0 340, अठारहवाँ संस्करण।

2- 'इतालीय युवा' को आर्त्तत्राण शतपथी ने 'राधानाथ ग्रंथावली' की भूमिका में 'क्षुद्र नवन्यास' नाम दिया है, किन्तु उपन्यास का स्वरूप और प्रवृत्ति इसमें परिलक्षित न होने के कारण कृष्णचन्द्र बेहेरा ने इसे रोमान्सधर्मी कहानी कहा है, उपन्यास नहीं।

दूसरे मतवाले उपन्यास-साहित्य पर अंग्रेजी साहित्य का अप्रत्यक्ष प्रभाव मानते हैं । उनके मतानुसार हिन्दी उपन्यासों पर अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव बंगला के माध्यम से पड़ा । बंगाल में पहले आधुनिक शिक्षा प्रचारित होने के कारण वहाँ पाश्चात्य साहित्यादर्श के अनुसरण में आधुनिक बंगला साहित्यका विकास भी पहले हुआ । सन् 1870 तक वहाँ माइकेल युग समाप्त होकर बंकिम युग आरंभ हो गया था । आधुनिक बंगला साहित्य भारत के दूसरे प्रान्त में जिस तरह परिव्याप्त हुआ था, समयानुसार हिन्दी तथा उड़िया के लेखक भी उससे परिचित हुए । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि —''इस उत्थान (द्वितीय उत्थान) के भीतर बंकिमचन्द्र, रमेशचन्द्र दत्त, हाराणचन्द्र रक्षित, चंडीचरण सेन, शरत् बाबू, चारुचन्द्र इत्यादि बंगभाषा के प्रायः सब प्रसिद्ध उपन्यासकारों की बहुत-सी पुस्तकों के अनुवाद तो हो ही गए, रवीन्द्र बाबू के भी 'आँख की किरकिरी' आदि कई उपन्यास हिन्दी रूप में दिखाई पड़े, जिनके प्रभाव से इस उत्थान के अंत में आविर्भूत होने वाले हिन्दी के मौलिक उपन्यासकारों का आदर्श बहुत कुछ ऊँचा हुआ ।''[1] आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि — ''हिन्दी में तो अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव शुरू-शुरू में सीधे न आकर बंगाली

1- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ0 340

लेखकों के माध्यम से ही आया ।''[1]

यहाँ उड़िया उपन्यास पर बंगला साहित्य के प्रभाव को स्पष्ट कर देना उचित होगा । आधुनिक उड़िया साहित्य-सृष्टि में बंगाली लेखकों का आविर्भाव साहित्यिक क्षेत्र में एक अविस्मरणीय घटना है । क्योंकि सन् 1870 तक उड़ीसा में उच्चशिक्षा का अभाव तथा आधुनिक शिक्षा के प्रति उड़िया भाषा-भाषियों का विशेष रूप से आकृष्ट न होने के कारण देश की उन्नति का समस्त कार्य बंगालियों द्वारा सम्पन्न हो रहा था । डॉ० नटवर सामन्तराय ने लिखा है कि —''उच्च शिक्षा लाभ हेतु बंगालीमाने आधुनिक बंगला साहित्य र रस-माधुरी प्रथमे अनुभव करि ताहारि आश्रय रे आधुनिक ओड़िया साहित्य-मन्दिर निर्माण करिवारे साहसी होइ पारिथिले ।''[2] उन्होंने यह भी लिखा है कि काव्यकार राधानाथ राय, औपन्यासिक उमेशचन्द्र सरकार, रामशंकर राय आदि लेखकों ने उड़िया साहित्य लिखकर वह साहित्यिक पृष्ठभूमि निर्मित की, जिसके आधार पर परवर्ती साहित्य विकसित होने में समर्थ हो पाया था । उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जहाँ हिन्दी लेखकों ने बंगला उपन्यास साहित्य के अनुवाद तथा उनसे अनुप्रेरित होकर

1- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी – हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास, पृ० 240

2- डॉ० नटवर सामन्तराय - आधुनिक ओड़िया साहित्यर भित्ति भूमि, पृ० 12, संस्करण -81

उपन्यास की रचना की थी वहाँ उड़िया में आलोच्य युग का उपन्यास साहित्य बंगला-भाषी उपन्यासकारों द्वारा रचित हुआ था । यहाँ हिन्दी की तुलना में उड़िया के प्रारंभिक उपन्यासों पर बंगला साहित्य का पूर्णरूपेण प्रभाव रहा है ।

वस्तुतः उपन्यास के उद्भव को लेकर किए गए उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि ये दोनों दृष्टिकोण एकांगी हैं । एक ओर पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव को स्वीकार करने वाले उपन्यास के उद्भव में भारतीय साहित्य की भूमिका को नकारते हैं, वहाँ दूसरे आलोचक उपन्यास को भारतीय साहित्य में चली आ रही कथा का ही विकसित रूप मानते हैं । वस्तुतः मूल्यांकन का सही दृष्टिकोण वही होगा जब हम भारतीयता तथा पाश्चात्य प्रभाव के साथ-साथ देश की सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में उपन्यास के विकास को देखने की कोशिश करेंगे ।

उपन्यास गद्य की एक विधा है । आधुनिक युग में गद्य के विकास के साथ उपन्यास साहित्य का उद्भव होता है । इसका जन्म देश की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिवेश में हुआ है । रामदरश मिश्र के शब्दों में —''उपन्यास का जन्म आधुनिक काल के यथार्थवादी परिवेश में हुआ है । उपन्यास पूँजीवादी सभ्यता की देन है । पूँजीवादी सभ्यता के विविध जीवन-मूल्यों को कथा के माध्यम से व्यक्त करने के लिए ही इसकी उत्पत्ति हुई

है। यह मात्र कहानी नहीं है। कहानी यानि कथा तो इसका माध्यम मात्र है। मूल वस्तु है वर्तमान जीवन की जटिल यथार्थवादिता। जीवन-मूल्यों का संक्रमण, समाज के नये संबंधों की निर्मिति, उसके बीच उठते हुए अनेक प्रश्नों को भौतिक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने की आकुलता, नवीन भौतिक सत्यों के बीच बनती हुई मानव-चरित्र की नयी दिशाएँ, ये सारी बातें मानो उपन्यास नामक विधा के माध्यम से फूट पड़ने के लिए आकुल थीं।''[1] प्राचीन काल में केवल कथा कहने की समस्या हल हुई थी। ''लेकिन आधुनिक उपन्यास केवल कथा-मात्र नहीं है, और पुरानी कथाओं और आख्यायिकाओं की भाँति कथा-सूत्र का बहाना लेकर उपमाओं, रूपकों, दीपकों और श्लेषों की छटा और सरस पदों में गुम्फित पदावली की छटा दिखाने का कौशल भी नहीं है।''[2] अतः कथा-साहित्य और आधुनिक उपन्यास में इतना अंतर आ गया है कि उसे प्राचीन कथा का सहज स्वाभाविक विकास कहना बड़ा कठिन लगता है।

1- डॉ० रामदरश मिश्र – हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा, पृ० 12,
द्वितीय संस्करण- 82

2- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी – हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास,
पृ० 238-38, संस्करण-82

हिन्दी में इस युग को आलोचकों ने उपन्यास के विकास में प्रयोग-युग माना है। हिन्दी की तरह उड़िया में भी इस युग को प्रयोग-युग कहा जा सकता है। यद्यपि हिन्दी में उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में इंशाअल्लाखाँ की 'रानी केतकी की कहानी' (1800-1805) और सदल मिश्र के 'नासिकेतोपाख्यान' (1803) जैसी रचना हो चुकी थी, किन्तु आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इन्हें उपन्यास की कोटि में नहीं रखा। उनके मतानुसार श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षा गुरु' (1882) अंग्रेजी ढंग का लिखा गया प्रथम मौलिक उपन्यास है।[1] इस युग में हिन्दी उपन्यास साहित्य-क्षेत्र में ऐसे बहुत से उपन्यासकारों का आगमन होता है, जिन्होंने सामाजिक, ऐतिहासिक, जासूसी, ऐयारी तथा तिलस्मी उपन्यास लिखे हैं। बाबू राधाकृष्णदास का 'निःसहाय हिन्दू' (1886 ई0), पं0 बालकृष्ण भट्ट का 'नूतन ब्रह्मचारी' (1886 ई0), और 'सौ अजान एक सुजान' (1892 ई0), मेहता लज्जाराम शर्मा का 'धूर्त रसिकलाल' (1899 ई0), गोपालराम गहमरी का 'बड़ा भाई' और 'सास पतोहू' (1898 ई0), किशोरीलाल गोस्वामी के 'त्रिवेणी' (1889 ई0, 'हृदय-हारिणी' (1898 ई0), 'लवंगलता' (1890 ई0), देवकीनन्दन खत्री के 'चन्द्रकान्ता' और 'चन्द्रकान्ता सन्तति' आदि उपन्यास इस युग में लिखे गये हैं।

1- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ0 455

O,156,3,M80:g TH 1540
DISS
152M4

पहले हम सूचित कर चुके हैं कि फकीर मोहन से पूर्व तक उड़ीया भाषा तथा साहित्य का भविष्य अन्धकाराच्छन्न था । उड़ीया में प्रयत्न-पूर्वक जो उपन्यास लिखे गए एक ओर हिन्दी की तुलना में संख्या में कम हैं, दूसरी ओर उनमें से कुछ असम्पूर्ण रह गये हैं । रामशंकर राय द्वारा रचित 'सौदामिनी' (1880 ई0) उपन्यास क्यों असम्पूर्ण रह गया था, उसके बारे में स्वयं उपन्यासकार ने अपनी ग्रंथावली में लिखा है — "'सौदामिनी' 'उत्कल मधुप' पत्रिका में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हो रहा था । मगर 'सौदामिनी' उपन्यास शेष नोहुँ पत्रिकाटि ग्राहकमानि रीतिमय देय आदाय न देवा जोगुँ काल कवलरे पडिथिला । मुं तत्कालीन स्कूल विभागीय डेपुटि इन्सपेक्टरकुं उपन्यास खण्डिक देखाइथिलि – आशा थिला जे ताहा विद्यालयर पाठ्य-पुस्तक रूपे गृहीत हेले व्यय भार वहन करि पुस्तकाकाररे छपाइवि कारण साधारण पाठकर अभाव हेतु खर्च करि छापा करिवा वृथा । डेपुटि इन्सपेक्टर महाशय पुस्तक रचनार भूयसी प्रशंसा करि उपन्यास पाठ्य-पुस्तक होइ न पारे बोलि निराश करिवारु मुं ताहा पुस्तकाकाररे छापा करिवाकु साहसी होइ नाहिं ओ तहिँर शेषांश कालक्रमे हजिगला । तेणु आम उपन्यास सृष्टि र प्राथमिक प्रयास पूर्णतः फलप्रसू होइ पारिला नाहिं, 'सौदामिनी' असम्पूर्ण अवस्थारे रहिगला ।"[1] फकीर मोहन

1- रामशंकर राय – रामशंकर ग्रंथावली, पृ0

सेनापति ने अपनी कविता 'उत्कल भ्रमण' में रामशंकर राय द्वारा रचित 'विवासिनी' (1895 ई0) को प्रथम उपन्यास माना है।[1] लेकिन जानकी वल्लभ महान्ति, गौरी शंकर राय आदि आलोचकों ने उमेशचन्द्र सरकार द्वारा लिखित 'पद्ममाली' (1888 ई0) को उड़ीया साहित्य का प्रथम उपन्यास माना है।[2] रामशंकर राय के 'सौदामिनी' (1880 ई0 असम्पूर्ण), 'उन्मादिनी' (असम्पूर्ण), 'विवासिनी' (1895 ई0), उमेशचन्द्र सरकार का 'पद्ममाली' (1889 ई0) आदि उपन्यास इस युग में लिखे गये हैं।

कथानक की दृष्टि से आलोच्य युग में दो तरह के उपन्यास लिखे गये हैं। एक वे उपन्यास हैं जिनमें कल्पना की प्रधानता है। हिन्दी में देवकीनन्दन खत्री द्वारा लिखित 'चन्द्रकान्ता' तथा 'चन्द्रकान्ता सन्तति' (सन् 1861, 1866), 'कुसुम कुमारी' (1898 ई0), 'भूतनाथ' (1907-16 ई0) आदि इसी कोटि में आने वाली जासूसी, ऐयारी रचनाएं हैं। ''इन उपन्यासों का लक्ष्य केवल घटनावैचित्र्य रहा, रससंचार, भावभूति या चरित्र-चित्रण नहीं। ये वास्तव में घटना-प्रधान कथानक या किस्से हैं जिनमें जीवन के विविध पक्षों के चित्रण का कोई प्रयत्न नहीं, इससे ये

1- फकीर मोहन सेनापति – फकीरमोहन ग्रंथावली,

2- अध्यापक खगेन्द्र नाथ मल्लिक – कथा सम्राट फकीर मोहन, पृ. 33 से उद्धृत

साहित्य-कोटि में नहीं आते।''[1] उड़ीया में जो उपन्यास लिखे गए उनमें कल्पना की प्रधानता तो है, लेकिन हिन्दी की तरह अलग से कोई जासूसी, ऐयारी या तिलस्मी उपन्यास नहीं लिखे गए हैं।

दूसरे वर्ग में वे उपन्यास आते हैं जो समकालीन जीवन और समाज की समस्याओं के यथार्थ चित्रण के प्रयास में लिखे गये हैं। इन उपन्यासों में अशिक्षा, बाल-विवाह, धार्मिक बाह्याडम्बरों आदि सामाजिक विकृतियों का विरोध किया गया है। हिन्दी में श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षा गुरु', बालकृष्ण भट्ट का 'नूतन ब्रह्मचारी' तथा 'सौ अजान एक सुजान' आदि में सामाजिक जीवन-व्यापारों को कथा का विषय बनाया गया है। उड़ीया में रामशंकर राय कृत 'विवासिनी', उमेशचन्द्र सरकार कृत 'पद्ममाली' आदि ऐतिहासिक उपन्यास होते हुए भी इनमें सामाजिक विकृतियों पर व्यंग्य किया गया है। वास्तव में इन सामाजिक उपन्यासों में समाज के बुनियादी सत्यों की पकड़ नहीं है। समाज की सतह पर बहती हुई घटनाओं को पकड़ा गया है, उनका निरूपण किया गया है, उन घटनाओं और परिस्थितियों

1- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ0 340

में किसी पात्र को डालकर उसकी उन्नति-अवनति की दिशाएँ अंकित की गयी है तथा उसके पाप-पुण्य और अन्याय क्रिया-कलापों का स्थूल चित्रण किया गया है।"[1]

ऊपर विवेचित ये दो तरह के उपन्यास घटना-चमत्कार पर आधारित हैं। घटनाओं को महत्व देने के कारण न कथानक का स्वाभाविक प्रवाह रह गया और न पात्रों का सहज विकास हो पाया है। देश, काल, पात्र की वास्तविकता से विच्छिन्न ये उपन्यास हैं। घटनाओं के आधिक्य के कारण न केवल ऐयारी, जासूसी उपन्यास ही बल्कि सामाजिक, ऐतिहासिक उपन्यास की सामाजिकता और ऐतिहासिकता पर संदेह होने लगता है।

घटनाओं का आधिक्य ही नहीं, इस युग में के उपन्यासों में चरित्र-सृष्टि का एकान्त अभाव है। इन उपन्यासों के समस्त नायक-नायिकाओं को यदि एक ही पंक्ति में खड़े कर दें तो उनमें कोई भी एक-दूसरे से चरित्र अन्तःरूप या वहिरूप से भिन्न दिखाई नहीं देगा। इन उपन्यासों के नायक कुलीन धन के या उच्च-वर्ग के होते थे तथा उन्हें देवगुणों से युक्त चित्रित

1- डा० रामदरश मिश्र -- हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा, पृ० 22

किया गया है । प्रायः सभी नायिकाएँ रूप-गुण सम्पन्ना होती थीं । उनका प्रत्येक अंग-प्रत्यंग सौंदर्यशास्त्र में निर्धारित नियमों के अनुसार बना है । यही कारण है कि ये उपन्यास व्यक्ति-प्रधान रह गये । इसमें पात्रों में विविधता का अभाव है । उनकी दृष्टि में उपन्यास मानव-चरित्र का अध्ययन न था, केवल मनोरंजन का उपकरण था । मनोरंजन के उद्देश्य से लिखित इन उपन्यासों में, रोचक कथानक को आगे बढ़ाने के लिए निर्मित पात्रों को न परिस्थितियों के अनुसार स्वतंत्र रूप में कार्य करने का अवसर दिया गया है, और न ही उनकी आन्तरिक भावनाओं के नैसर्गिक विकास की ओर ध्यान दिया गया है । अतः ये पात्र व्यक्तित्व विहीन होकर रह गये हैं ।

1- उड़ीया में उपन्यासकार उमेशचन्द्र सरकार ने अपने उपन्यास 'पद्ममाली' में नायिका के रूप का वर्णन इस तरह किया है -''पद्ममाली षोड़सवर्ष वयस्का ..... मुखरे लावण्यप्रभा ढ़ला-ढ़ला करुथिला ।xxxx चित्रकार तुलिकांकितर न्याय ईषत् वक्र भ्रुजुगल निम्न नीलोत्पलनिभ विशाल नेत्र-युगल नारि-नारि कटाक्ष निक्षेप करि दुर्गंकर अन्तरतम प्रदेश पर्यन्त विलोडित करुथिला xxxx इत्यादि इत्यादि ।'' (प्रथम परिच्छेद)

नीतिवादिता या उपदेशात्मकता

इन उपन्यासों की तीसरी विशेषता यह है – उपदेशात्मकता। आलोच्य युग के अधिकतर उपन्यासों में सत्य की विजय और असत्य की पराजय दिखाई गयी है। अनेक कठिनाइयों के पश्चात् विजयश्री नायक-नायिकाओं को ही मिलती है। उपन्यासों के अंत में पापी तथा अन्यायी को दण्डित किया गया है। हिन्दी में 'परीक्षा गुरु', 'सौ अजान एक सुजान' आदि शिक्षामूलक उपदेश-प्रधान उपन्यास हैं। उनमें कुसंगति के दुष्परिणामों तथा सत्संगति के सुपरिणामों को दिखाया गया है। उड़िया में 'पद्‌ममाली', 'विवासिनी' आदि उपन्यासों में भी सत्य की विजय तथा असत्य की पराजय दिखाई गयी है। 'पद्‌ममाली' में अन्याय के कारण दुर्योधन दास, राम्भिया माँ आदि का अंत करुण होता है, जब कि नीति और आदर्श के पथ पर परिचालित होने के कारण क्षमानिधी बलवन्तराय, जयन्ती, परीक्षित सिंह और पद्‌ममाली पुरष्कृत होते हैं। इन उपन्यासों में लेखक एक शिल्पी की तरह नहीं, बल्कि एक शिक्षक की तरह सामने आये हैं। विभिन्न घटना और चरित्र-चित्रण के क्रम में अवसर प्राप्त होते ही इन उपन्यासकारों ने कुछ-न-कुछ नीति उपदेश उपस्थापित किए हैं। नीति-उपदेश की अधिकता के कारण इन उपन्यासों की रचना-शैली अधिकांशतः अपनी स्वाभाविकता खो

चुकी है । सारांश यह है कि कथानक चाहे सामाजिक हो या ऐतिहासिक लेखक समाज के सामने विभिन्न ढंगों से ऐसा आदर्श रखना चाहते हैं जिससे ये अपना जीवन सुधार सकें । अतः सुधारवादी दृष्टिकोण के कारण इनमें कोरा आदर्शवाद ही रह गया है ।

आलोच्य युग के उपन्यास की चौथी विशेषता यह है कि ये व्यक्ति-केन्द्रित उपन्यास हैं । इनमें व्यक्तिगत जीवन का सुख-दुःख, प्रेम-परिणय, मिलन-विछेद को ही प्रमुखता मिली है । लेकिन व्यक्ति समाज का अंग है, समाज के विधि-निषेध, दौर्बल्य-दुर्बलता, राजनैतिक तथा आर्थिक संगठन प्रति मुहूर्त में बदलते रहते हैं तथा व्यक्ति के सुख-दुःख, विरह-मिलन को नियंत्रित करते हैं, इस बात की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया था । क्योंकि, इन साहित्यकारों ने कतिपय नैतिक मानदण्डों के अतिरिक्त सम-सामयिक जीवन की वास्तविक समस्याओं की ओर कम ही ध्यान दिया था । वे जिन मानदण्डों की वकालत करते हैं ये मानदण्ड स्वतः परिवर्तन-शील हैं, उन्होंने इस तथ्य की उपेक्षा की थी, उन्होंने मूल्यों को शाश्वत मान लिया था ।..[1] यही कारण है कि इन्होंने व्यक्ति को ही महत्व दिया ।

1- डा० मुकुन्द द्विवेदी - हिन्दी उपन्यास युगचेतना और पाठकीय संवेदना, पृ० 17, प्रथम संस्करण, 1970 ई०

फलस्वरूप इस युग के उपन्यासों में उस युग का सामाजिक, राजनैतिक,आर्थिक परिवेश का चित्रण कम मिलता है। चमत्कार योजना, कुतूहल वृत्ति और कल्पना के कारण वास्तविक जीवन की समस्याओं का चित्रण कम हुआ है।

प्रेमचंद तथा फकीर मोहन सेनापति के पूर्ववर्ती उपन्यासों में तीन प्रकार की भाषा-रीतियों का प्रयोग दिखाई पड़ता है —(1)अंग्रेजी रीति प्रभावित भाषा, (2) संस्कृत प्रभावित भाषा, (3) अरबी-फारसी मिश्रित भाषा। अतः प्रेमचंद तथा फकीर मोहन के पूर्व तक भाषा में कोई स्थिरता नहीं आई थी। संस्कृत के प्रभावस्वरूप उनकी भाषा अलंकारिक और बनावटी थी। चाहे पात्र निम्नवर्ग के हों या उच्चवर्ग के सभी की भाषा एक ही प्रकार की थी। अतः पात्र विशेष से भाषा के प्रयोग में कोई भेद नहीं है। इस युग के उड़ीया उपन्यासों की भाषा के संबंध में सर्वेश्वरदास ने लिखा है —"दृढ़बंध भावसाम्य, सुसम्बद्ध गठनपरिपाटी, गुरुगंभीर शब्द निर्वाचन, सुमर्जित रुचि विचाररे एहार स्वकीय महिमारे प्रतिष्ठित हेले हें ए भाषा ओड़िया नुहें - संस्कृत भाषार छायारे ढ़ला एक कृत्रिम साधु भाषा। एहार प्रेरणार उत्स सारला, बलराम ओ जगन्नाथदास नुहंन्ति - श्रीहर्ष, भवभूति, भंज अथवा ईश्वरचन्द्र वा बंकिमचन्द्र।"[1]

1- सर्वेश्वरदास – युगद्रष्टा फकीर मोहन, पृ० 177, सप्तम संस्करण।

प्रेमचंद के पूर्ववर्ती उपन्यासों की भाषा में कोई स्थिरता नहीं आई थी। वहाँ भी संस्कृत, अंग्रेजी और अरबी फ़ारसी मिश्रित भाषाओं का प्रयोग हुआ है। यद्यपि कुछ उपन्यासकारों ने सामान्य जनता की भाषा को उपन्यास की भाषा के रूप में ग्रहण की है किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली थी। उपर्युक्त समान प्रवृत्तियों के होते हुए भी प्रेमचंद तथा फकीर मोहन के पूर्ववर्ती उपन्यास की प्रवृत्तियों में कुछ असमानताएँ हैं। एक तो ऐतिहासिक उपन्यास के संबंध में, दूसरे ऐयारी तिलस्मी उपन्यासों को लेकर असमानताएँ दृष्टिगत होती हैं। फकीर मोहन के पूर्ववर्ती उपन्यास की जो परंपरा है उसमें हिन्दी की तरह कोई ऐयारी या तिलस्मी उपन्यास नहीं लिखे गये हैं। हिन्दी में जो ऐतिहासिक उपन्यास लिखे गये हैं उनमें इतिहास नहीं बल्कि कल्पना की प्रधानता है। किशोरी लाल गोस्वामी ने अपने उपन्यासों के बारे में लिखा है --"हमने अपने बनाये उपन्यासों में ऐतिहासिक घटनाओं को गौण और अपनी कल्पना को मुख्य रखा है और कहीं-कहीं तो कल्पना के आगे इतिहास को दूर से ही नमस्कार कर दिया है। यहाँ कल्पना का राज्य है, यथेष्ट लिखित इतिहास का नहीं।"[1] इसके विपरीत उड़ीया में उमेशचन्द्र सरकार द्वारा रचित 'पद्ममाली' के इतिहास के बारे में लेखक ने लिखा है "दुइगोटि समसामयिक ऐतिहासिक घटनार सम्बन्धरे पद्ममाली रचित.... ए सबक वर्णनारे एक पबरे जेमिति इतिहासर एक वर्ण अपलाप करिनाहुँ, अन्यपक्षरे पाठकर चित्तरंजन करिबाकु अधिक जलवान होइछु।"[2] इन सामान्य असमान्य प्रवृत्तियों की तुलना में प्रेमचंद और फकीरमोहन के पूर्ववर्ती उपन्यास में समान प्रवृत्तियों की ही अधिकता है।

1- डा0 सुषमा- हिन्दी उपन्यास : परंपरा और प्रयोग, पृ0 86 से उद्धृत
2- उमेशचन्द्र सरकार -पद्ममाली, भूमिका से उद्धृत, संस्करण -1912

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रेमचंद तथा फणीश्वर नाथ रेणु के पूर्ववर्ती उपन्यास साहित्य में कल्पना की उड़ान थी, वह नीतिवाद से बोझिल साहित्य था। वास्तविक जीवन के कठोर सत्य से वह बहुत दूर था। यद्यपि कुछ उपन्यासकारों ने सामाजिक जीवन की समस्याओं को चित्रित करने की कोशिश की थी, किन्तु एक ओर यह प्रयत्न सीमित था तो दूसरी ओर उनमें सूक्ष्म-दृष्टि का अभाव था। किन्तु नवयुग के आगमन से तत्कालीन जीवन में नूतन दृष्टिकोण उन्मेष हुई। ''इस काल में देश की सामाजिक जागृति एवं राजनीतिक चेतना के कारण अवस्था ऐसी हो गयी थी कि उस समय हमें अपने वास्तविक रूप से अवगत करने वाले, अपनी अन्तर्निहित शक्तियों का आभास देने वाले जागरण की आवश्यकता हुई – ऐसे साहित्य की, जो विचार में स्वतंत्र हो, चिन्तन में सन्तुलित हो, जीवन के अवरोधक शक्तियों के प्रति उग्र हो, दीन-दरिद्र जनता की हीन दशा से विक्षिप्त हो, और सर्वोपरि भारत की मूल जनता के जीवन को ही प्रदर्शित करके उसकी आशाओं और अभिलाषाओं को वाणी देने वाला हो।''[1] प्रेमचंद तथा फणीश्वर नाथ रेणु ने अनुभव किया कि अब तक उपन्यासों में जो प्रवृत्तियां दृष्टिगत हो रही हैं, जिस उद्देश्य से उपन्यास लिखे जा रहे हैं, वह वर्तमान युग की उपर्युक्त अपेक्षाओं की पूर्ति

1- डा० एस० एन० गणेशन - हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन (पाश्चात्य उपन्यास से तुलना सहित), पृ० 67, प्रथम संस्करण-1962

के लिए अक्षम या असमर्थ है । अतः उनमें सुधार की आवश्यकता है । उन्होंने विषय-वस्तु, चरित्र, भाषा, उद्देश्य आदि के क्षेत्रों में मौलिक प्रवृत्तियों का परिचय दिया और साहित्य के कला, कला के लिए उद्देश्य से दूर, जीवन के अधिक निकट लाने का प्रयत्न किया । यहीं पर आकर प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति मिलते जैसे के उपन्यासकारों से अलग होते हैं । यही कारण है कि सामाजिक व्यवस्था और उपन्यास के दृष्टिकोण में परिवर्तन से दोनों उपन्यासकारों के उपन्यासों में भी विषयगत और शिल्पगत नवीनता पाई जाती है ।

—

तृतीय अध्याय

विषय-वस्तु की दृष्टि से 'गोदान' और 'ढर्अ माणि आठ गुंठ'का तुलनात्मक अध्ययन

तृतीय अध्याय

प्रथम अध्याय में उल्लेख किया जा चुका है कि प्रेमचंद का साहित्यिक जीवन प्रारंभ होता है सन् 1901 ई० से और 1936 ई० तक वे निरन्तर उपन्यास लिखते रहे। उनके लिखे गये उपन्यासों में —'प्रेमा' (1907 ई०), 'सेवासदन' (1918 ई०), 'वरदान' (1921 ई०), 'प्रेमाश्रम' (1922 ई०), 'रंगभूमि' (1925 ई०), 'कायाकल्प' (1926 ई०), 'निर्मला' (1927 ई०), 'गबन' (1931 ई०), 'कर्मभूमि' (1932 ई०) तथा 'गोदान' (1936 ई०) में लिखे गये हैं। फकीर मोहन ने अपने औपन्यासिक जीवन में कुल चार उपन्यास लिखे हैं। वह हैं – 'छमाण आठ गुंठ'(1902 ई०), 'मामुँ' (1913 ई०), 'लछमा' और 'प्रायश्चित' (1915 ई०)।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रेमचंद साहित्यिक क्षेत्र में एक लम्बे दौर की यात्रा तय करके अपनी श्रेष्ठतम कृति 'गोदान' तक पहुँचते हैं। किन्तु 'छमाण आठ गुंठ' फकीर मोहन की पहली कृति है। काल की दृष्टि से दोनों उपन्यासों में लगभग 34 साल का अन्तर है। फिर भी दोनों उपन्यासकारों ने अपने समाज का, उस परिवर्तित सामाजिक परिस्थितियों के कारणों का सूक्ष्म-दृष्टि से अध्ययन किया था। गाँव का

जमींदार, महाजन किस प्रकार ग्रामीण किसान का शोषण करते हैं – यह दृश्य दोनों उपन्यासकारों ने अपने जीवन में देखा था ।

प्रेमचंद का जन्म'लमही'गाँव में हुआ था । शिक्षा विभाग में सब डिप्टी-इन्सपेक्टर के रूप में उन्होंने गाँव-गाँव का दौरा किया था । अतः ग्रामीण जनता और उनकी विविध समस्याओं के बारे में प्रेमचंद को अच्छा ज्ञान था । वे ग्रामीण जनता के मनोविज्ञान, उनके विचार आदि से भलीभाँति परिचित थे । ग्रामीण जनता से घनिष्ठ सम्पर्क के परिणामस्वरूप ग्रामीण जीवन की हर समस्या से वे परिचित थे । यही कारण है कि, प्रेमचंद अपने उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का बड़ा ही सजीव चित्रण कर सके हैं । उन्होंने जो कुछ लिखा है उसके पीछे उनका अनुभव निहित है । उन्होंने बड़े ही यथार्थ ढंग से उनकी दुर्बलताओं, विशेषताओं और समस्याओं पर प्रकाश डाला है ।

प्रेमचंद सदृश्य फकीर मोहन ने पहले 1863 से 1871 तक शिक्षक के रूप में कार्य किया है । किन्तु उसके बाद वे अपने परम मित्र तत्कालीन जिलाधिकारी जन बिम्स की सहायता से 1871 ई० में देशीय राज्य नीलगिरि के दिवान पद पर नियुक्त होते हैं । 1871 ई० से 1897 ई० तक अर्थात् दीर्घ 25 वर्ष तक फकीर मोहन ने नीलगिरि, डोमपड़ा, ढेंकानाल, दशपल्ला, केन्दुझर आदि राज्यों के दिवान रूप में राज्यों का

शासन दायित्व परिचालित किया था । दीर्घकाल के इस दिवान कार्य से फकीर मोहन को जन-जीवन की समस्याओं का अध्ययन करने की सुविधा प्राप्त हुई थी । राजा, जमींदारों की जीवनधारा, उनका शोषण और अत्याचारों के संबंध में उनका प्रत्यक्ष ज्ञान था । उन राज्यों के दिवान रूप में कोर्ट, वकील, सरकारी कर्मचारियों से उनका घनिष्ठ संबंध था । अतः ग्रामीण जीवन,उनकी समस्या, जमींदारों का अत्याचार, कोर्ट, वकील, पुलिस आदि विभिन्न विषयों को लेकर उन्होंने जो चित्र उपस्थित किया है, वह वास्तव भूमि पर आधारित है ।

छः माण आठ गुंठ की कथावस्तु :

आधुनिक युग में शोषक-शोषित, अत्याचारी-अत्याचारित एवं धनी-निर्धन के बीच जो संघर्ष है, वही प्रधान समस्या है । 'छः माण आठ गुंठ' 28 परिच्छेदों में विभाजित एक चरित्र-प्रधान तथा समस्यामूलक उपन्यास है । इसकी मूल समस्या है - ऋण समस्या । उधार के भंवर में गांव का सीधा-सादा, भोला-भाला किसान किस तरह डूबता जाता है, इसका वर्णन है । इसकी तह में जो सामाजिक विधान है या जमींदारी,महाजनी सभ्यता है,उसमें किसान किस तरह शोषित, प्रेषित होता है, अपनी जमीन बंधक रखकर अंतिम सांस तक संग्राम करता है और हार जाता है, उसकी करुण गाथा है । इसमें भगिया और सारिया के शोषण की कथा को केंद्र में रखकर उपन्यास

की कथावस्तु का निर्माण हुआ है, एवं विभिन्न उत्थान-पतन के बीच इसकी कथा परिणति तक पहुँचती है। इसकी कथावस्तु अत्यंत संक्षिप्त और सरल है।

रामचंद्र मंगराज गाँव का जमींदार तथा महाजन भी है। वह अपनी असाधारण कूटबुद्धि और येन-केन प्रकारेण कौशलपूर्वक फतेपुर सरखण्ड जमींदारी का मालिक बन जाता है। अर्थात् पहले उड़ीसा की सारी जमींदारी कलकत्ते में नि: नीलाम होती थी। मिदनापुर का शेख करामत अली कलकत्ते में खूब कम दाम में फतेपुर सरखण्ड नाम जमींदारी को नीलाम में खरीदा था। उसके बाद उनका सुयोग्य पुत्र दिलदार मियाँ शराब और साकी के नशे में अपनी सम्पत्ति का उपभोग कर रहे थे। रामचंद्र मंगराज उसी जमींदार के यहाँ कारिन्दे का काम करता था। अपने मालिक की मूर्खता का लाभ उठाकर, उसे कर्ज दे-देकर अंत में फतेपुर सरखण्ड का खुद मालिक बन जाता है। मंगराज की दृष्टि से अर्थ ही जीवन का सर्वस्व है। अर्थ से बढ़कर अपना परिवार, नाते-रिश्ते का कोई महत्व नहीं है। मंगराज की सम्पत्ति बनाने का कौशल था अन्याय रूप में अशिक्षित सरल ग्रामीण जनता को कर्ज देकर उनकी जमीन हड़पना। यहाँ तक कि अपने स्वार्थ-सिद्धि के लिए अपनी मौसी के बेटा श्याम मल्ल शहर में ब्याज खाने से दीवी सावित्त का ब्राह्मण भोजन स्वरूप उसकी पन्द्रह एकड़ जमीन छीन लेना, यह भी उसकी कूटबुद्धि का परिचय है।

उसी गाँव में भगिया और सारिया नामक सरल तंतुवाय दम्पत्ति रहते थे। उनके पास छह बीघा जमीन (छह माण आठ गुण्ठ) थी, जिसकी उपज गाँव के सभी खेतों से अच्छी होती थी। उसी के नामानुसार इस उपन्यास का नाम है। उपजाऊ धरती के इस छोटे से टुकड़े पर रामचन्द्र की दृष्टि पड़ी। उसने उसे प्राप्त करने का संकल्प कर लिया। सन्तानहीन भगिया सारिया की कमजोरी को मँगराज खूब जानता था। सन्तान लाभ से वंचित दुःखिनी सारिया अपने जीवन की शेषहीन व्यथा किसी के सामने प्रकट नहीं करती थी, लेकिन ग्राम की देवी मंगला को अपना दुःख सुनाती थी। सारिया के मन की यह दुर्बलता शोषक मँगराज को शोषण के लिए सुविधा देती है। यहाँ धर्म, भगवान के प्रति विश्वास ही शोषण के लिए दृश्य सज्जित करता है। मँगराज की इस स्वार्थ-पूर्ति में चम्पा उनके दाहिने हाथ का काम करती है। दुष्ट-चरित्रा चम्पा के बहलाव में सन्तानहीन सारिया पुत्र प्राप्ति की आशा से ग्राम-देवी मंगला का मंदिर बनवाने की बात मान लेती है। मंदिर निर्माण करने के लिए अर्थ की आवश्यकता है। उनकी आर्थिक स्थिति सारिया-भगिया को अपनी छह बीघा जमीन मँगराज के पास बंधक रखने पर मजबूर करती है। छह महीने के लिए सारिया-भगिया अपनी जमीन बंधक रखते हैं, किन्तु कर्ज न चुका पाने के कारण उनकी जमीन पर मँगराज का अधिकार हो जाता है। साथ ही मुकद्दमे में खर्च किये गये रुपयों के लिए नीलाम स्वरूप उनका घर और नेत नाम की गाय

भी ले लेता है । इस तरह भगिया-सारिया अपना जीवनस्वरूप छह बीघा जमीन खोकर रास्ते के भिखारी बन जाते हैं । घर, जमीन, गाय सब खोकर भगिया पागल हो जाता है और सारिया अनाचार में मंगराज के द्वार पर अपने प्राण त्याग देती है । मंगराज की पत्नी सान्तागी अपने पति का दुष्कर्म, अधर्म, अत्याचार देखकर दुःख में अपना जीवन समाप्त करती है और यहीं से मंगराज का पतन आरंभ होता है ।

सारिया की हत्या करने के अभियोग में मंगराज पर मुकद्दमा चलता है । मुकद्दमे में मंगराज अपनी सारी जमींदारी वकील राम राम लाला के पास बंधक रखते हैं । सेसन जज के कोर्ट में मुकद्दमा पर विचार होता है । प्रमाण के अभाव में मंगराज सारिया की हत्या के अभियोग में अपराधी साबित नहीं हो सके । अतः सारिया की हत्या के अपराध में उन्हें दण्डित नहीं किया जाता, बल्कि सारिया-भगिया की नेत नामक गाय को जबरदस्ती ले जाने के अभियोग में उन्हें छह महीने का सश्रम कारादण्ड और पाँच सौ रुपया जुर्माना देना पड़ता है ।

चम्पा और गोविन्दा ने मंगराज के जेल जाने के उपरांत उनकी सारी सम्पत्ति लेकर भाग जाते हैं । यहाँ भी अर्थ के लिए दोनों में झगड़ा होता है । गोविन्दा, चम्पा का गला काट देता है और उसकी परिणति भी नदी के गर्भ में हो जाती है । मंगराज को जेल में पागल भगिया नाक काट

देता है। शारीरिक तथा मानसिक कष्ट से मंगराज का अंत होता है।
इस तरह 'छः माण आठ गुंठ' की कथा की परिणति करुण में होती है।

गोदान की कथावस्तु :

छत्तीस परिच्छेदों में विभाजित 'गोदान' की कथा का केन्द्र है— होरी नामक किसान का जीवन। इसमें होरी वह ग्रामीण किसान है जो पूरे किसान वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। होरी के परिवार में पत्नी धनिया, सोलह वर्षीय एकमात्र पुत्र गोबर और दो लड़कियाँ – सोना, बारह वर्ष और रूपा, आठ वर्ष की है। इसमें प्रेमचंद ने होरी के माध्यम से एक ग्रामीण किसान का स्वभाव, उसके समस्त गुण-दोष, अभाव-समस्या का बड़ी गहराई चित्रण किया है। उपन्यास के प्रथम परिच्छेद में यह दिखाया है कि होरी के जीवन की सबसे बड़ी अभिलाषा एक-मात्र पछाईं गाय लेने की है। लेकिन उसकी यह छोटी-सी आशा उसे कितनी ही विडम्बनाओं और परेशानियों के जाल में फँसाती है। ''कितनी भयंकर विषमता है कि, कृषि-प्रधान देश भारत का एक किसान गाय रखने की छोटी सी इच्छा लेकर इतना तड़पे मानो कि वह कोई साम्राज्य पाना चाहता हो और धर्मप्राण भारतीय लोग इस आकांक्षा की पूर्ति में बाधक बनें और जीवित गाय का सुख उठाने से वंचित कर मरी गाय का सारा अभिशाप उसके गले मढ़ दें और धार्मिक अनुष्ठान के

लिए विवश कर अपने आर्थिक अभाव में कस दें और सारी बात आकर अर्थ पर ठहर जाय।''[1] होरी का अंतिम परिणाम यही होता है। अपने गांव का भोला नामक ग्वाला 'मेहरिया' पाने की आशा से अस्सी रुपये में उसे गाय देने को राजी हो जाता है। गाय आती है किन्तु उसी रात को होरी का छोटा भाई हीरा उसे जहर देकर गाँव से भाग जाता है। होरी सोचता है कि यहाँ समस्या हल हो गयी। लेकिन यहाँ समस्या खत्म नहीं होती बल्कि जटिल होती जाती है। गाय की मृत्यु की सूचना पाकर थानेदार गाँव में पहुँचता है और वह भी अकेले नहीं बल्कि उनके साथ गाँव के पंच-परमेश्वर भी होते हैं। दातादीन, झिंगुरी सिंह, नोखेराम, मँगरू शाह ये वही छोटे-मोटे महाजन हैं जो होरी को पनपने नहीं देते। होरी अपने भाई हीरा के घर की तलाशी न लेने के लिए थानेदार को तीस रुपये दे देता है; किन्तु बीच में धनिया आकर सारा खेल बिगाड़ देती है। यह खेल शोषक शक्तियों के मन में बदले की भावना को जगाता है। ये इसका बदला लेते हैं – जब गोबर से झुनिया का अन्तर्जातीय विवाह होता है। पंचायत उस पर दण्ड लगाती है। इसी दंड और में उसका सारा अनाज झिंगुरी सिंह के चंगुल में पहुँच जाता है और मकान गिरवी हो जाता है। इस तरह होरी का जीवन शुरू से लेकर अन्त तक कठिनाइयों के साथ सतत संघर्ष में ही बीत जाता है। वह एक भी समस्या सुलझा नहीं पाता कि दूसरी समस्या उपस्थित हो जाती है। वंश मर्यादा, उसकी धर्मान्धता, उसकी

---

1. रामदरश मिश्र – हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा, पृ0 56

बिरादरी की रक्षा में वह दिन-प्रतिदिन महाजनों के जाल में फँसता जाता है। एक दिन उसके जीवन में ऐसा आता है कि उसका घर, प्राण-समान तीन बीघा जमीन भी शोषक की शोषण प्रक्रिया में समा जाती है। इस तरह होरी किसान से मजदूर बन जाता है। रोज आठ आने पर वह ऊख की खुदाई में लग जाता है। वह सोचता है "अगर यह काम दो महीने भी टिक जाए तो गाय-भर को रुपया मिल जायेंगे।"[1] किन्तु गायप्राप्ति की लालसा उसके मन में ही रह जाती है। यहाँ भी शोषक उसे छोड़ता नहीं है। वह होरी के मृत शरीर के पास पहुँच जाता है। अपनी स्वार्थ-पूर्ति के लिए महाजन होरी का अंत तक पीछा नहीं छोड़ते हैं। यही गोदान का अंत है। "किसान मुर्दा है और उसकी स्त्री मूर्छित है। सूदखोर दातादीन पुरोहित के रूप में अब भी खाट पसारे सामने बैठे हैं।"[2] अंतिम समय में गोदान की आवाजें सुनकर "धनिया यंत्र की भाँति उठी, आज जो सुतली बेची थी उसके बीस आने पैसे लायी और पति के ठंडे हाथों में रखकर दातादीन से बोली –"महाराज, घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा। यही पैसे हैं, यही इनका गोदान है और पछाड़ खाकर गिर पड़ी।"[3]

1- प्रेमचंद - गोदान, पृ० 297

2- डा० शिवनारायण श्रीवास्तव - हिन्दी उपन्यास (ऐतिहासिक अध्ययन), पृ० 11 से उद्धृत

3- प्रेमचंद - गोदान, पृ० 300

प्रेमचंद ने ग्रामीण जीवन के साथ 'गोदान' में शहरी जीवन का भी चित्रण किया है। राय साहब, मिल-मालिक खन्ना, मालती और मेहता आदि पात्रों के द्वारा शहरी जीवन की जीवनधारा का वर्णन किया है। इस वर्णन में प्रेमचंद का मुख्य उद्देश्य एक ओर शहरी जीवन की समस्याओं पर प्रकाश डालना था तो दूसरी ओर ग्रामीण जीवन के महत्व को प्रतिपादित करना था। 'गोदान' में शहरी जीवन और ग्रामीण जीवन की कथा का विकास एक-दूसरे के पूरक के रूप में है।

विषयवस्तु की दृष्टि से दोनों उपन्यासों की समान प्रवृत्तियाँ :

प्रेमचंद का 'गोदान' और फकीर मोहन सेनापति का 'छमाण आठ गुंठ' की कथावस्तु में जो समानता पाई जाती है वह ये कि दोनों उपन्यासकारों ने ग्रामीण जीवन को अपनी कथावस्तु का मुख्य विषय बनाया है। दोनों उपन्यासकारों ने देखा था कि वर्तमान की समाज-व्यवस्था, विभिन्न प्रकार के अत्याचार, अन्याय और विषमता पर आधारित है। इन सामाजिक अत्याचारों का मूल कारण है अर्थ। अर्थ केन्द्रित इस नारकीय, अमानवीय समाज व्यवस्था का दोनों उपन्यासकारों ने अपने उपन्यास में सशक्त शैली में अभिव्यक्त किये हैं। इस समाज-व्यवस्था में शासक वर्ग ने अशिक्षित ग्रामीण जनता का शोषण कर, उन्हें किस तरह दैन्य और मौत की गोद

में भुला दिया है, उसका ज्वलन्त उदाहरण 'गोदान' और 'छ माण आठ गुंठ' है ।

प्रेमचंद और फकीर मोहन ने ग्रामीण किसानों की भयंकर गरीबी का चित्र प्रस्तुत करने के लिए अर्थ केन्द्रित समाज की 'ऋण' समस्या को अपने उपन्यास के केन्द्र में रखा है । इस समस्या को प्रस्तुत करने का अर्थ था — एक ओर ब्रिटिश सरकार की शासन-व्यवस्था तथा दूसरी ओर जमींदारी, महाजनी सभ्यता में निहित स्वार्थ, शोषण की पोल खोलना । क्योंकि किसानों की दरिद्रता का सीधा संबंध शासन-व्यवस्था से था । अतः ग्रामीण किसान की समस्याओं के अन्तर्गत निम्नलिखित विषयों के आधार पर दोनों उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन किया जायेगा ।

1- ग्रामीणों का विचार, उनका अंधविश्वास ।

2- ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति ।

3- उस युग की शासन-व्यवस्था में किसानों के शोषण की भूमिका ।

ग्रामीण जनता का विचार और अंधविश्वास :

जैसा कि सामाजिक पृष्ठभूमि में उल्लेख किया जा चुका है - फकीर मोहन और प्रेमचंद के युग की अशिक्षित ग्रामीण जनता प्राचीन जर्जरित रूढ़ियों और अंधविश्वासों से जकड़ी हुई थी । 'गोदान' में होरी और 'छ माण आठ गुंठ' में भगिया-सारिया ग्रामीण किसान का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

ग्रामीण किसान की धार्मिक भावना, उनका अंधविश्वास उन्हें किस तरह सामाजिक हत्या का शिकार बनाते हैं, उसका ज्वलन्त उदाहरण है - होरी, भगिया-सारिया । यहाँ दोनों उपन्यासकारों ने ग्रामीण किसान किस तरह अंधविश्वासी, भाग्यवादी होते हैं, उसका चित्रण किया है । ईश्वर के ऊपर उनका अटल विश्वास है । वे पूर्वजन्म में भी विश्वास करते हैं । यही कारण है कि वे अपनी वांछित वस्तु की अप्राप्ति में उसे पूर्वजन्म का कर्मफल समझकर चुप हो जाते हैं । यह अंधविश्वास उन्हें अपने शोषक का विरोध करने में असमर्थ बना देता है । 'गोदान' का होरी पूर्वजन्म में विश्वास करता है । वह कहता है -''यह बात नहीं है बेटा, छोटे-बड़े भगवान के घर से बनकर आते हैं । सम्पत्ति बड़ी तपस्या से मिलती है, उन्होंने पूर्वजन्म में जैसे कर्म किये हैं, उसका आनन्द भोग रहे हैं । हमने कुछ नहीं संचा तो भोगें कैसे?''[1] इस पूर्वजन्म के सिद्धान्त की आड़ में जमींदार, महाजन शोषण करते हैं । किन्तु होरी अंतिम साँस तक उनका विरोध नहीं कर पाता ।

फकीर मोहन ने अपने उपन्यास में सन्तानहीन भगिया और सारिया के माध्यम से ग्रामीण जनता के अंधविश्वास, ईश्वर विश्वास का चित्रण किया है । अपने जीवन की सन्तानहीन व्यथा को सारिया ने और किसी के पास प्रकट नहीं की है, किन्तु अपने गाँव की देवी के सामने प्रकट करती है । सारिया के अन्तर्मन की यह दुर्बलता शोषक मंगराज के उद्देश्य की

1- प्रेमचंद - गोदान, पृ० 18

पूर्ति के लिए पृष्ठभूमि तैयार करती है । मंगराज अपने गाँव के जगा तथा सना नामक पूजक से अपना उद्देश्य साधित करते हैं । फकीर मोहन ने लिखा है — ''मंगराज के आदेशानुयायी ठाकुराणीर आस्थान तलु पक दिगकु गोटिए बड़ गाड़ खोलागला । गाड़ मध्यरे जगा पैठारि लुचि रहिला, गाड़ मुँह डालमन्न रे लुचाइ दिया गला xxxx मुँ आछुरि जगाण करि कहिलि, मा मंगला । सारियाकु अपि वर दिअ, से अनेक दिन हेला तुमर सेवा करुछि । अनेक लोकंकु वर देलणि, एमानंकु वर दिअ । जगा गाड़ भीतरु जबाब देला, आलो सारिया, तु अनेक दिन हेला मोर पूजा करुछु, प्रतिदिन गधिस्नारि जिवधिलि मोते जुहार होइ जाउ, पानि चलाए देउ, मुँ से पानि पाए, तोते वर देउछि, तोर तीनी गोटि पुत्र हेव, आउ तोहर ढेर टंका सुना हेव । तु मोहर देउल तोलाइ दे । कालि बड़िसकालि अधुला मुंहरे दुइ प्राणी तली तोठकु आसिव । मो पूजा मन्दार फूल पेऊँठरि पड़िथिव, ता तले खोलिवु, जाहा पाइवु धरि नेइ रखिवु ; प्रतिदिन पूजा करिवु, तेवे सम्पिरि बलि बलि देवि, मो आज्ञा न मानिले भगिया वेक मोड़िदेवि ।''[1] इस प्रकार गाँव की देवी पर सारिया के विश्वास से मंगराज असत्यसम्म प्रण का शोषण का बेन प्रस्तुत करता है ।

1- फकीर मोहन सेनापति — छमाँ माणं आठ गुंठ, पृ0 129

युगों से चली आ रही इस शोषण-प्रक्रिया में किसान इतना डरपोक हो गया है कि वह अपने अधिकार की मांग भी नहीं कर सकता, क्योंकि उनकी गरदन जमींदार के पांव तले दबी हुई है। अगर गरदन उठाने की कोशिश करेंगे तो उनकी जमीन छीनी जायेगी। 'गोदान' में होरी ने अनेक स्थलों पर अपनी डरपोक प्रवृत्ति का परिचय दिया है। वह कहता है, ''यह इसी मिलते-जुलते रहने का परसाद है कि अब तक जान बची हुई है, नहीं तो कहीं पता नहीं चलता कि किधर गये। गांव में इतने आदमी तो हैं, किस पर बेदखली नहीं आई? किस पर कुड़की नहीं आई? जब दूसरों के पांव तले अपनी गरदन दबी हुई हो तो उन पांवों को सहलाने में ही कुशलता है।''[1]

फकीर मोहन ने भी अपने उपन्यास में लिखा है कि श्याम गोबाइत की जमीन से रामचन्द्र मंगराज अपनी जमीन के लिए किस तरह धान के पेड़ अधिकारपूर्वक उखाड़ लेता है। वह जमीन जिस पर श्याम गोबाइत का अपना अधिकार है, जो उसकी सम्पत्ति है, उससे मंगराज धान का पेड़ उखाड़ कर आधी जमीन साफ कर देता है। किन्तु श्याम गोबाइत उसका विरोध नहीं कर पाता; क्योंकि उसकी गरदन भी जमींदार के पांव तले दबी हुई है। अगर वह मंगराज का विरोध करेगा तो उसकी जमीन भी छीन ली जायेगी। स्वयं मंगराज कहता है –''तू खेती-बाड़ी करना जाने या न जाने उधार खाये धान के सूद-मूल में किस्वा-किस्वा खेत छीन जाने पर सब कुछ अच्छी तरह जान

1- प्रेमचंद - गोदान, पृ० 7

जाएगा।''[1] यहाँ होरी की तरह श्याम गोबाश्त की गर्दन भी जमींदार के पाँव तले है। इसलिए वह नम्न करते रह जाता है किन्तु अधिकार के लिए नहीं लड़ता।

किसान की आर्थिक स्थिति :

प्रेमचंद और फकीर मोहन ने अनुभव किया था कि किसान की इस डरपोक प्रवृत्ति का मूल कारण है उसकी आर्थिक स्थिति। अर्थाभाव के कारण उसे जमींदार और महाजन की शरण में जाना पड़ता है। यह ऋण वह मेहमान है जो एक बार आने के बाद जाने का नाम नहीं लेता। उसकी गरीबी, उसे ऋण लेने पर मजबूर करती है। प्रेमचंद होरी की आर्थिक स्थिति का चित्रण करते हुए लिखते हैं,"एक तो जाड़े की रात, दूसरे माघ की वर्षा, मौत का सा सन्नाटा छाया हुआ। होरी भोजन करके पुनिया के मटर के खेत की मेड़ पर अपनी मड़ैया में लेटा हुआ था। चाहता था, शीत को भूल जाए और सो रहे, लेकिन तार-तार कम्बल, फटी हुई मिर्जई और शीत के झोंकों से गीली पुआल, इतने शत्रुओं के सम्मुख आने का नींद में साहस न था। आज तम्बाकू भी न मिला कि उसी से मन बहलाता। उपला सुलगाता था, पर शीत में वह भी बुझ गया।

1- फकीर मोहन सेनापति - छ: माण आठ गुंठ, पृ0 15

केवल फटे पैरों को पेट में डाल कर, हाथों को जाँघों के बीच में दबा कर और कम्बल में मुँह छिपाकर अपनी ही गर्म साँसों से अपने को गर्म करने की चेष्टा कर रहा था। ..... कम्बल तो उसके जन्म से भी पहले का है। बचपन में अपने बाप के साथ वह इसी में सोता था। जवानी में गोबर को लेकर इसी कम्बल में उसके जाड़े कटे थे और बुढ़ापे में आज वही बूढ़ा कम्बल उसका साथी है; पर अब वह भोजन को चबाने वाला दाँत नहीं, दुखने वाला दाँत है। जीवन में ऐसा तो कोई दिन नहीं आया कि लगान और महाजन को देकर कभी कुछ बचा हो।''[1] होरी की यह आर्थिक स्थिति,झुनिया, रूपा की शादी, गाय रखने की एक छोटी-सी अभिलाषा आदि की पूर्ति के लिए उसे ऋण लेने पर मजबूर करती हैं। ऋण के बोझ में आखिरी साँस तक वह दबा रहता है, किन्तु अपना कर्ज नहीं चुका पाता। क्योंकि जमींदार महाजन कर्ज चुकाने के लिए ऋण नहीं देते थे, बल्कि उनकी जमीन हड़पने की स्वार्थ प्रवृत्ति इसके पीछे निहित रहती थी।

'गोदान' में होरी की आर्थिक स्थिति जैसे होरी को ऋण लेने पर मजबूर करती है, वैसे ही 'कर्ज मांग आठ गुँठ' में भी भगिया -सारिया को उनकी आर्थिक स्थिति ही मंदिर बनवाने के लिए मैंगराज से ऋण लेने पर

1- प्रेमचंद - गोदान,पृ० 100

मजबूर करती है । भगिया वह किसान है जो एक रुपये को गिनने में पति पत्नी दोनों दरवाजा बन्द करके गिनते हैं और यदि कभी उन्हें सवा रुपये मिलते हैं तो उसे अपने भाई लोकनाथिया के पास से गिनाकर लाना पड़ता था । फकीर मोहन लिखते हैं –" देढ़श टंकार अर्थ बुझिवा ताश पक्षरे कि सहज कथा ? टंकाकर पइसा गणिवाकु ऐसे सारिया गड़ु बाहारे नाहिं, भगिया आउ से दुइ जण कवाट किलि देइ दुइ-तिनि घण्टा मध्यरे गणिकरि ठीकु करन्ति । येउँ दिन पाँचसुका कि अठरअणार दुगा बिक्रि हुए, सेदिन ताश भाई लोकनाथिया पाखरु गणाइ अणाअ ।"[1] अतः चम्पा से मंदिर निर्माण करने के लिए डेढ़ सौ रुपये की आवश्यकता उसको विचलित कर देती है । अंततः उसकी आर्थिक स्थिति मंगराज के पास छह बीघा जमीन बंधक रखने पर मजबूर करती है । चोरी की तरह अपनी जमीन बंधक रखकर उसी रुग्ण अवस्था में उसका प्राण पखेरू उड़ जाता है ।

शासन-व्यवस्था :

किसानों की दरिद्रता का सीधा संबंध शासन-व्यवस्था से था । भारतीय किसान की मुख्य जीविका है खेती । जमींदार, किसान और सरकार के बीच मध्यस्थ का काम करता था । जमींदार किसान से रुपया

1- फकीर मोहन सेनापति – छ्अ माण आठ गुंठ,पृ0 76

ज्यादा पैसा वसूल करता था कि वह स्वयं ठाठ-बाट से रह सके और विदेशी सरकार को मालगुजारी भी दे सके । प्रथम अध्याय में उल्लेख किया जा चुका है कि उस समय विदेशी सरकार के सम्मुख मुख्यतः दो तरह की समस्या थी -- सुशासन प्रतिष्ठा और शासन को परिचालित करने के लिए अर्थ-संग्रह । सुशासन प्रतिष्ठा करने के लिए उन्होंने विचार-विभाग का द्वार खोल दिया और दूसरी समस्या की पूर्ति के लिए राजस्व विभाग । यह राजस्व-विभाग और विचार-विभाग समकालीन समाज को व्यापक रूप से प्रभावित किया था । अब सरकार ने भूमि-धारियों का एक वर्ग खड़ा किया । पारंपरिक जमींदार श्रेणी का पतन और नूतन जमींदार श्रेणी के अभ्युदय से सामाजिक जीवन में भी परिवर्तन आया । पूर्व के जमींदार और इन नूतन जमींदारों के विचार और व्यवहार में बहुत परिवर्तन आ गया था । 'गोदान' में राय साहब की वार्तालाप से तथा 'छः माण आठ गुंठ' में बाघसिंह वंश और मंगराज के विचार में जो प्रभेद है -- उपर्युक्त बातों का दृष्टान्त है । इन नूतन जमींदारों के लिए अर्थ ही जीवन का सर्वस्व था । अर्थ के सम्मुख अपना परिवार या परिवार से संबंधित व्यक्तियों का कोई महत्व नहीं था । इस तरह अंग्रेजी शासन व्यवस्था के नूतन आइन-प्रणयन का परिणामस्वरूप यह था कि समाज में एक नूतन शोषक गोष्ठी का निर्माण हुआ था ।

दूसरी ओर अंग्रेजों के भू-राजस्व आइन से व्यक्ति रूप में किसान भूमि का स्वामी हुआ । यह अधिकार प्राप्त करने के परिणामस्वरूप व्यक्ति

को अपनी सम्पत्ति अपनी इच्छानुयायी बेचने की क्षमता मिली । कृषि निर्भर जनता को इस व्यवस्था ने एक दिन इस स्थिति पर पहुँचा दिया कि जमीन से ग्रामीण जनता जब वंचित हुई तब उसकी स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गयी । सारिया-भगिया की छह बीघा जमीन और होरी की तीन बीघा जमीन -- उनके लिए केवल जमीन नहीं है, बल्कि उनका वह दिल के टुकड़े के समान है ।

यद्यपि इस भू-व्यवस्था से देश के किसान को जमीन पर एक नूतन अधिकार मिला था, किन्तु समाज में युगों से शोषक का अभाव नहीं है । समय के परिवर्तन के साथ इनका बाह्य रूप ही बदलता है । पूर्व के जमींदार के स्थान पर यह नूतन जमींदार श्रेणी सिर्फ अपना पहनावा बदल कर आयी है और शासन-व्यवस्था की सहायता से जनता का शोषण करती है । प्रेमचंद और फकीर मोहन ने यह नूतन शासन-व्यवस्था अत्याचारी अन्याय का दमन करने के बदले किस प्रकार उसका साथ देती है, उसकी आलोचना की है ।

पुलिस का कार्य जनता की जान-माल की रक्षा करना है, किन्तु पराधीन भारत में पुलिस निरीह जनता का किस तरह शोषण करती है, प्रेमचंद के 'गोदान' और फकीर मोहन के 'छः माण आठ गुंठ' में इस तथ्य का उद्घाटन किया गया है । 'गोदान' में दरोगा की काली करतूतों का

पदर्शित किया है । होरी की गाय को ईर्ष्यावश हीरा जहर देकर गाँव से भाग जाता है । दरोगा गंडासिंह होरी से रिश्वत पाने की आशा से वहाँ पहुँचकर घर की तलाशी लेने की धमकी देता है । होरी अपनी मर्यादा रखने के लिए सोचता है, ''हीरा अलग सही, पर दुनिया तो जानती है वह उसका भाई है ; मगर इस वक्त उसका कुछ बस नहीं । उसके पास रुपये होते तो इसी वक्त पचास रुपये लाकर दरोगाजी के चरणों पर रख देता - सरकार मेरी इज्जत अब आपके हाथ में है ।''[1] होरी की यह भावना उसे पटेश्वरी से तीस रुपये लेने पर मजबूर करती है । इसमें दरोगा ही नहीं,गाँव के पाँच मुखिया भी शामिल हैं । किन्तु बीच में धनियाँ होरी के बने बनाये खेल को बिगाड़ देती है । यह खेल दरोगा के मन में बदले की भावना को जगाता है । वह कहता है — ''मुझे ऐसा मालूम होता है कि इस शैतान की खाला ने हीरा को फँसाने के लिए खुद गाय को जहर दे दिया ।''[2]

'कर्म मार्ग आठ गुठ' में शेख रूनाएत हुसैन और मुंशी चन्द्रधर दास इस तरह के रिश्वतखोर दरोगा हैं । रामचन्द्र मंगराज से एक हजार रुपया रिश्वत पाने की आशा से मिथ्या अपराध में रत्नपुर के ग्रामों को

1- प्रेमचंद - गोदान, पृ0 95

2- वही, पृ0 96

जेल जाना पड़ता है, किन्तु स्वार्थी मंगराज जब उनकी स्वार्थ-पूर्ति नहीं करते तब शेख इनायत हुसैन मंगराज से बदला लेने के लिए मौके की तलाश में रहते हैं। अतः सारिया की मृत्यु की खबर पाते ही शेख इनायत हुसैन वहाँ पहुँच जाते हैं। सारिया की लाश देखते हुए दरोगा जी अपनी दाढ़ी में हाथ फेरते हैं और कहते हैं — ''क्यों रामचन्दर मंगराज। अब क्या मतलब। है – रत्नपुर डोमों का मामला याद है कि नहीं।''[1] मुंशी भी कहते हैं — ''xxxx एवा माधरी शीत गला बोलि मंगराजि मने कारिबि परा ?''[2] इस तरह दरोगा जी अपनी स्वार्थ-पूर्ति करने का अवसर ढूँढ़ते रहते हैं।

इस प्रकार दोनों उपन्यासकारों ने दिखाया है कि सरल और निरीह किसान का शोषण जमींदार और उसके कारिन्दे तो करते ही हैं, पुलिस का शोषण भी कुछ कम नहीं है। पुलिस में रिश्वत और झूठ का प्राबल्य है। पुलिस की सहायता पाकर जमींदार और उसके कारिन्दे जनता को पूरी तरह कुचल देते हैं।

<u>न्याय व्यवस्था :</u>

अपराधी व्यक्तियों को दण्ड देना, न्याय व्यवस्था का प्रधान कार्य है। फकीर मोहन और प्रेमचंद युग में पुलिस जिस तरह शोषण के यंत्र

1- फकीर मोहन सेनापति - छमाण आठ गुंठ, पृ0 122

2- वही, पृ0 122

के अतिरिक्त और कुछ नहीं थी, उसी तरह न्याय-व्यवस्था भी जनता का शोषण करने में जमींदार और महाजन की सहायता करती थी ।

फकीर मोहन ने 'छर्ज माण आठ गुंठ' में तत्कालीन न्याय-व्यवस्था पर बड़ा मनोरंजक मार्मिक व्यंग्य करते हुए लिखा है –"..... आसिवाटि अदालत दुआर मेला, लोकमानि ज्ञानी, अर्थात् सभ्य हेलेणि, पंचायत शासन किए मानुछि ? अंग्रेजी आइन कहे, 'देख बाबा सावधान । तुम्भे जेबे किछि अपराध कर आउ सेथिरे यदि आइनसंगत प्रमाण पाऊ, दण्ड देबु ।"[1]

चलाक लोक कहिला– "आहा आपण जेमन्त प्रमाण न पाइबे, सेथिर फिकर मोते जणा ।" आउ वकील ताहा पिठि थापुडाइ कहिले, 'कुछ परवा नेहिं, टंका आण, मुं कलाकु धला धलाकु कला करिदेबि ।"[2] इसका परिणाम यह होता है कि धनवान और चालाक, अपराध करते हुए भी निरपराधी घोषित किए जाते हैं और जो निरपराधी हैं वे दण्डित होते हैं । इस उपन्यास में मंगराज से वकील राम राम लाला कहते हैं – "शुणुछ त मंगराज । सहज कथा नुहैं, बरकन्दाज ठारू हाकिम पर्यन्त समस्तंकु हात करिबाकु हेब । मामला जेमति टाण, आउ केहि वकील होइथिले नगद दस हजार धरि मध्य मुंह देइपारन्ता नाहिं, मुं बोलि एमिति

1- फकीर मोहन सेनापति - छर्ज माण आठ गुंठ, पृ0 47

2- वही

पशुबि । x x x x आपणंक जमींदारी मीति वटकक्ता लेबिदिउन्तु । सतु टंका जे एवे खरच होइजिव, स्पारि नुहैं । आपण खलास हैले मुं कड़ा दाम् हिसाब बुझाइवि ।''[1]

उपर्युक्त समस्याओं के अतिरिक्त फकीर मोहन और प्रेमचंद ने 'गोदान' और 'छ्अ माण आठ गुंठ' में पारिवारिक समस्या, धार्मिक आडम्बरों का भी चित्रण किया है। दोनों उपन्यासकारों ने परिवर्तित सामाजिक व्यवस्था में शील, सत्यनिष्ठ, पारिवारिक जीवन की निःस्वार्थ एकता के स्थान पर निर्मित एक धोखाधड़ी, झूठ, खुशामद और बाह्याडम्बरों से परिपूर्ण सामाजिक जीवन का भी चित्रण किया है।

पारिवारिक समस्या :

परिवार में पति-पत्नी का महत्वपूर्ण स्थान होता है। पति-पत्नी के परस्पर स्नेह और सहयोग से पारिवारिक जीवन सुखी एवं सन्तोषजनक होता है। प्रेमचंद और फकीर मोहन युग की आर्थिक, सामाजिक व्यवस्था में जो परिवर्तन आया था, उससे समाज का पूरा सामाजिक ढाँचा बदल गया था। इस व्यवस्था में व्यक्ति वैयक्तिक स्वार्थ को प्रमुखता देने लगे थे। इन परिस्थितियों में पारिवारिक जीवन की शांति भंग हो गयी। फकीर मोहन

1- फकीर मोहन सेनापति - छ्अ माण आठ गुंठ, पृ0 141

और प्रेमचंद के उपन्यास में दाम्पत्य जीवन की कटुता और विषमताओं का चित्रण हुआ है। साथ ही दोनों उपन्यासकारों ने पुरुष की स्वच्छन्दता एवं उच्छृंखलता प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला है। पुरुष पर कोई बंधन नहीं है। पत्नी के जीवित रहते हुए दूसरा विवाह कर सकता है या रख सकता है। यद्यपि इन पुरुषों की पत्नियाँ त्यागमयी और पतिव्रता होती हैं, परन्तु ये पुरुष स्वयं अर्थलिप्सु, स्वार्थी और दुराचारी होते हैं। इसी कारण पतिपत्नी में प्रेम नहीं रहता।

'गोदान' में झुन्ना और गोविन्दी के दाम्पत्य जीवन का वर्णन करते हुए प्रेमचंद ने लिखा है – ''झुन्ना और गोविन्दी में नहीं पटती, क्यों नहीं पटती यह बताना कठिन है। ..... झुन्ना के पास विलास के ऊपरी साधनों की कमी नहीं, अच्छत दर्जे का एक बंगला है, अच्छत दर्जे का फर्नीचर, अच्छत दर्जे की कार और अपार धन, पर गोविन्दी की दृष्टि में जैसे इन चीजों का कोई मूल्य नहीं। इस खारे सागर में वह प्यासी पड़ी रहती है। .... झुन्ना अपने प्राहकों के साथ जितना ही नम्र था, घर में उतना ही कटु और उदण्ड। ..... लेकिन यह सब कुछ होने पर भी झुन्ना उसके सर्वस्व थे। वह दलित और अपमानित होकर भी झुन्ना की लौंडी थी।''[1] फकीर मोहन के 'छमाँ मणि आठ गुंठ' में रामचन्द्र मंगराज और उनकी पत्नी सन्तानी की स्थिति भी यही है। मंगराज सन्तानी

1- प्रेमचंद - गोदान, पृ० 158

के त्याग और सेवा की अवहेलना करता है । मंगराज का व्यवहार चम्पा के साथ जितना ही नम्र होता है शान्तानी के साथ उतना ही कटु । शान्तानी उसके व्यवहार से क्षुब्ध होकर एकान्त में बैठी रोती रहती और मंगराज कमरे में चम्पा के साथ बैठे बातें करते रहते हैं । यह अपमान सहकर भी शान्तानी पूरी निष्ठा से पति की सेवा किये जाती है । फकीर मोहन ने लिखा है –''चम्पार अवज्ञासूचक 'हँ' शब्द सान्तानीकं कलिजरे वर्छा परि वाजिथिला । ताहा बाद 'आच्छा', तुम्भे बाहारकु जाओं कवाट तालुरे सहस्र बिछा कामुड़िला परि जणागला । चम्पा रहिव भितरे, मुं जिवि बाहारकु ? जेसबु घटनारे पुरुषंक कठिन मन भांगिपड़े , कोमलमना स्त्री मानि सहजरे सहिजान्ति ।''[1]

उपर्युक्त खन्ना और गोविन्दी तथा मंगराज और शान्तानी के दाम्पत्य-जीवन से स्पष्ट है कि पति या पत्नी में से किसी एक की ओर से उपेक्षा प्रकट किये जाने पर यदि दूसरा अपने कर्तव्य का पालन करता है तो स्थिति भयंकर नहीं होती । बल्कि अपनी कर्तव्य निष्ठा से अन्ततः अपने पति के हृदय पर विजय पाती है । 'गोदान' में खन्ना की चीनी मिल में आग लग जाती है और उस समय गोविन्दी अपनी सहानुभूति एवं स्नेह से, खन्ना को अपने वश में कर लेती है । उसी तरह 'छर्ड माण

1- फकीर मोहन सेनापति - छर्ड माण आठ गुंठ,पृ0 57

आठ गुंठ' में सान्तानी की मृत्यु के बाद मंगराज पत्नी के प्रति किये गये अन्याय का अनुभव करते हैं और उनकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं ।

<u>धार्मिक आडम्बरों का चित्रण :</u>

फकीर मोहन और प्रेमचंद का समाज धार्मिक आडम्बरों से ग्रस्त था । पूजा-पाठ, दान-धर्म, आदि बाह्याडम्बरों को ही धर्म समझा जाता था । फकीर मोहन और प्रेमचंद इन रूढ़ि ग्रस्त परंपराओं का आँख मूंद कर अनुसरण करने वाले व्यक्ति नहीं थे । अतः दोनों ने अपने उपन्यास में धर्म के इस विघटनकारी रूप का चित्रण करते हुए इस तथ्य पर प्रकाश डाला कि धर्म का वर्तमान रूप सामाजिक विकास के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है । दोनों उपन्यासकारों ने छापा तिलकधारी ब्राह्मण, पण्डितों की काली करतूत तथा विद्या-वेद-विहीन, आचरण विहीन ब्राह्मणों पर भी व्यंग्य किया है । 'गोदान' में झुनिया कहती है —''बरसों से दूध लेकर बाजार जाती हूँ। ...... एक पंडितजी बहुत तिलक मुद्रा लगाते हैं । आधा सेर दूध लेते हैं । एक दिन उनकी घरवाली कहीं नेवत में गई थी । मुझे क्या मालूम । और दिनों की तरह दूध लेकर भीतर चली गयी । .... इतने में देखती हूँ तो पंडित जी किवाड़ बंद किये चले आ रहे हैं । मैं समझ गयी, इसकी नियत खराब है । × × × × यही लिखा है तुम्हारे पोथी-पत्रे में कि दूसरों की बहू-बेटी को अपने घर बंद करके बेइज्जत करो । इसलिए तिलक-मुद्रा का

जमा किये बैठे हो ?''[1]

फकीर मोहन ने भी आचरण विहीन एवं तपस्या विवर्जित ब्राह्मणों का उपहास करते हुए लिखा है —

"शुण परीक्षि नरनाथ, ताम्पड़ा शुखुआ पखालभात,
सि अक्षर विवर्जित,चित्त पखतादि शोभित
बिल बाछिवाकु आग, दक्षिणा कु बाध ।
सन्ध्या-गायत्रीहीन ,बिलरु विपन्ति मीन ।
पोथिरु न फिटे डोरी, नामटि सुन्दर त्रिपाठी ।''[2]

यह है फकीर मोहन का समाज जिसमें सना राणा जैसे पण्डित सारिया को मंगराज से रुपये लेकर धर्म की आड़ में ठगता है । ये वही ब्राह्मण पण्डित हैं जो कर्मविहीन होकर भी अपने को ब्राह्मण कहते फिरते हैं । दोनों उपन्यासकारों ने इन ब्राह्मण-पण्डितों को अपने व्यंग्य-वाणों से बींधा है । उन ईश्वर के भक्तों की काली-करतूतों का पर्दाफाश किया है ।

1- प्रेमचंद - गोदान, पृ0 41

2- "सुनहु परीक्षित वचन हमारा । झींगा सुखुआ भात अधारा ।
काला अक्षर भैंस बराबर । टीका और जनेऊ सुन्दर ।
खेत निरानि में अगुआना । दक्षिणा पर बाघ समाना ।
संध्या गायत्री से हीना । खेत-खेत में चपि मीना ।
पोथी की न उघारें डोरी । यजमानी चावल की चोरी ।
सभा बीच मुँह लगि टाटी । नाम मगर सुन्दर त्रिपाठी ।''
-अनुवादक - युगजीत नवलपुरी - छह बीघा जमीन, पृ053

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'गोदान' और 'छ माण आठ गुंठ' में प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति ने किसान वर्ग की आर्थिक स्थिति, उनका विचार, शोषण के कारण तथा शोषण के विभिन्न रूपों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। इससे किसान वर्ग के जीवन की विस्तृत झाँकी प्रस्तुत की गयी है। उपर्युक्त समानताओं के अतिरिक्त दोनों उपन्यासकारों का युग और उस युग से प्रभावित परिस्थितियाँ अलग-अलग होने के कारण 'गोदान' और 'छ माण आठ गुंठ' में असमान प्रवृत्तियाँ भी देखी जा सकती हैं।

विषयवस्तु की दृष्टि से 'गोदान' और 'छ माण आठ गुंठ' की असमान प्रवृत्तियाँ :

प्रेमचंद ने 'गोदान' में एक नये किसान वर्ग के उदय होने का संकेत दिया है। किन्तु काल की दृष्टि से तथा परिस्थितियों की भिन्नता के कारण फकीर मोहन ने नये किसान वर्ग का उल्लेख नहीं किया है। प्रेमचंद ने लिखा है कि यह नया वर्ग रूढ़िग्रस्त समाज तथा समाज में व्याप्त अंधविश्वास में विश्वास नहीं रखता। रामदरश मिश्र के शब्दों में --''किसान की यह एक नई पीढ़ी अधिक निश्चिंत, निर्भीक, समझदार, उग्र और धर्म के आतंक से मुक्त होती जा रही थी। वह आर्थिक संबंधों को अधिक सफाई से समझती थी। वह अपने अधिकारों को अधिक समझती थी तथा शोषकों के

शोषण को दया, सहायता के रूप में न लेकर शोषण के रूप में ही लेती थी।"[1] होरी इस अत्याचारियों के हाथों लुट जाता है, इसलिए कि धनिया की तरह उसमें लुटेरों के विरुद्ध विद्रोह करने की क्षमता नहीं है। किन्तु धनिया और गोबर इसका विरोध करते हैं। धनिया कहती है -"हमने जमींदार के खेत जोते हैं, तो वह लगान ही तो लेगा। उसकी खुशामद क्यों करें? उसके तलवे क्यों सहलायें?"[2] इस नई पीढ़ी का किसान भाग्यवादी भी नहीं है। उसमें भाग्यवादिता की भावना कम होती जा रही थी। इसी कारण गोबर कहता है कि भगवान ने तो सबको बराबर ही बनाया है।

औद्योगीकरण तथा मजदूरों की समस्या :

आर्थिक कठिनाइयों के कारण यह नई पीढ़ी कृषि के धंधे को छोड़कर मजदूरी करने को विवश हो जाती है। 'गोदान' में गोबर इन्हीं कारणों से गाँव छोड़कर मजदूरी करने शहर चला जाता है। प्रेमचंद का युग औद्योगिक विकास का युग है। प्रेमचंद ने औद्योगिक समस्या का विस्तार से वर्णन किया है। जैसा कि प्रथम अध्याय में यह उल्लेख किया जा चुका है

1- दयानंद पाण्डेय (सम्पादक) - प्रेमचंद व्यक्तित्व और रचनादृष्टि, पृ0 89 प्रथम संस्करण से उद्धृत

2- प्रेमचंद - गोदान, पृ0 7

कि औद्योगीकरण के विकास से समाज दो वर्गों में बंट गया था – एक पूंजीपति और दूसरा मजदूर । गांव के जमींदार और महाजनों के शोषण से किसानों की दशा सोचनीय हो रही थी । वही दशा शहरों में मजदूरों की थी । इस व्यवस्था से पूंजीपति खूब धनवान हो रहे थे और उन्हें किसी वस्तु का अभाव नहीं था । उद्योगपति अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए अन्याय ढंग से मजदूरों का शोषण करते हैं । 'गोदान' में चीनी की मिल जल जाने के बाद मि० खन्ना कहते हैं –''आप नहीं जानते मिस्टर मेहता मैंने अपने सिद्धांतों की कितनी हत्या की है । कितनी रिश्वतें दी हैं, कितनी रिश्वतें ली हैं । किसानों की जा तोलने के लिए कैसे आदमी रखे, कैसे नकली बाट रखे ।"[1] उद्योगपतियों की इस शोषण प्रक्रिया से मजदूरों की दशा बहुत शोचनीय हो रही थी । मजदूरों को न तो रहने की सुव्यवस्था प्राप्त थी और न भोजन की । मिस्टर मेहता मजदूरों के आवास और भोजन की दुर्व्यवस्था का वर्णन करते हुए कहते हैं –'' क्या आपका विचार है कि मजदूरों को इतनी मजूरी दी जाती है कि उसमें चौथाई कम कर देने से मजूरों को कष्ट नहीं होगा । आपके मजूर बिलों में रहते हैं – गंदे बदबूदार बिलों में – जहाँ आप एक मिनट भी रह जाएं तो आपको कै हो जाए । कपड़े जो ये पहनते हैं, उनसे अपने जूते भी न पोंछेंगे । खाना जो खाते हैं, वह आपका

1- प्रेमचंद - गोदान, पृ० 243

कुत्ता भी न खायेगा । मैंने उनके जीवन में भाग लिया है । आप उनकी रोटियाँ छीनकर अपने हिस्सेदारों का पेट भरना चाहते हैं । ''[1] इस तरह प्रेमचंद ने औद्योगीकरण के विकास से समाज में जो समस्या सृष्टि हुई 'गोदान' में उस समस्या का उद्घाटन किया है ।

निष्कर्ष :

'गोदान' और 'छ माण आठ गुंठ' की विषय वस्तु के उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि दोनों उपन्यासकारों ने साधारण जनता को महत्व दिया है । पूर्व से चली आ रही नर-नारी की रोमांटिक प्रणय-गाथा को अपने उपन्यास का विषय न बनाकर शोषक जमींदार राय साहब, रामचन्द्र मंगराज का होरी धनिया और सारिया-भगिया के ऊपर होने वाला निर्मम अत्याचार की दर्दभरी कहानी को अपने उपन्यास की कथावस्तु के रूप में चुना है । प्रेमचंद और फकीर मोहन ने सामाजिक रूढ़ियों, अंधविश्वासों, धार्मिक बाह्याडम्बरों, किसान की शोचनीय आर्थिक, सामाजिक स्थिति, जमींदार, पूँजीपति की निरंकुशता, सरकारी कर्मचारियों के अन्याय-अत्याचार आदि को अपने उपन्यास का विषय बनाया । समाज रूपी चक्र के नीचे कितने भगिया सारिया, होरी-धनियाँ, गोबर रास्ते के भिखारी बन जाते हैं, किस तरह उम्र पूरी होने से पहले, जीवनरूपी सौरभ फैलने से पहले मिट्टी में मिल

1- प्रेमचंद - गोदान, पृ0 29।

जाति है, इस सत्य को दोनों उपन्यासकारों ने अनुभव किया था । इस देश की मिट्टी और मनुष्य से उनका परिचय था । अतः प्रेमचंद तथा फकीर मोहन सेनापति ने एक ओर ब्रिटिशी शासन अवस्था में व्याप्त अन्याय और अत्याचार की पोल खोली तो दूसरी ओर व्यक्ति को उत्पीड़ित करने वाली सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक रूढ़ियों के विरुद्ध आवाज उठायी ।

विषय संबंधी उपर्युक्त समानताओं के बावजूद दोनों उपन्यासकारों के उपन्यासों में कुछ असमान विषय दृष्टिगत होते हैं । यह असमानता देखी जाती है कि प्रेमचंद के उपन्यास में/अपनी आर्थिक कठिनाइयों के कारण नई पीढ़ी का किसान किस तरह कृषि को छोड़कर नगर के उद्योगों की ओर आकर्षित होता है । प्रेमचंद ने शहरी जीवन और औद्योगिक विकास में मजदूरों की स्थिति पर प्रकाश डाला है । किन्तु फकीर मोहन के उपन्यास में उपर्युक्त विषयों का उल्लेख नहीं किया गया है । इस असमानता का मुख्य कारण दोनों उपन्यासकारों के काल तथा परिस्थितियों की भिन्नता है । फकीर मोहन के युग में के बारे में डा० नटवर सामन्तराय ने लिखा है —''व्यक्तिर आत्मचेतना ए सम्पर्के न थिला कहिले चले ; तेणु जमीदारमानंकर अत्याचार ओ जुलुम विरुद्ध रे तुण्ड पिटाइबा सेतेबेळे अत्याचारित, निष्पेषित लोक पक्षरे आदौ सम्भपर नथिला एपरि दुर्वह ... समय जीवन पक्षरे आत्मविश्वास अपेक्षा धर्म विश्वास एकमात्र सहज और निरापद अवलम्बन थिला । 'धर्मरजय, पापर पराजय' रे

समन्वय लौकिक पक्षरे एक सार्थक उद्देश्य मिला।''[1] इसी कारण से फकीर मोहन के 'छः माण आठ गुंठ' के भगिया-चासियों में विद्रोह की भावना का उन्मेष नहीं हो पाया है। किन्तु प्रेमचंद युग में इसी क्रांति होती है, उसका प्रभाव दूसरे देशों की जनता पर पड़ना स्वाभाविक था। अतः प्रेमचंद के गोदान में एक नये किसान वर्ग के उदय की सूचना मिलती है जो अपने अधिकार के प्रति जाग्रत और सचेष्ट दिखाई देता है।

Why does Hori die at the end?? x

चतुर्थ अध्याय

औपन्यासिक कला की दृष्टि से 'गोदान' और 'कअं माणि आठ गुंठ' का तुलनात्मक अध्ययन

चतुर्थ अध्याय

उपन्यास को कला के रूप में स्वीकृति मिल चुकी है। जहाँ तक प्रश्न है उपन्यास को मिश्रित कला माना गया है। आलोचकों ने उपन्यास कला को दो दृष्टियों से देखा है। कुछ आलोचकों के मतानुसार ''उपन्यास में पात्रों के, जिन्हें हम अनिवार्यतः अपने समान मानव प्राणियों के रूप में देखते हैं और उनके साथ खुद को तादात्मीकृत करते हैं, कार्यों और भावनाओं का प्रत्यक्ष अंकन होता है; इसमें नैतिक और भावनात्मक संकटों का, घटना और स्थितियों का, जो हमारी अनुभव क्षेत्र की वस्तुएँ हैं, चित्रण होता है। उपन्यास उन भावनात्मक और नैतिक प्रतिमानों से, जो हमारी जिन्दगी के अभिन्न अंग हैं, तथा शील और आचरण की समस्त समस्याओं से, जिनसे हम प्रतिदिन घिरे रहते हैं, प्रत्यक्ष रूप में जुड़ने के लिए बाध्य है। अतः कला रूप में उपन्यास पर बातचीत करने के प्रसंग में इस प्रकार की समस्याओं से अपने को अलग रखना असंभव है।[1]'' दूसरी ओर रूपवादी आलोचक उपन्यास को 'शब्दगुच्छ' के रूप में देखते हैं। अतः उपन्यास के कला में उसके रूप और भाषा के विवेचन को उपन्यासकला समझते हैं। वस्तुतः देखा जाए तो रचनाकार जीवन की समस्याओं को शब्दों के

1- डॉ० नामवर सिंह (सम्पादक) - आलोचना, त्रैमासिक प्रेमचंद विशेषांक, पृ०3 से उद्धृत

माध्यम से प्रस्तुत करता है । अतः उपन्यास कला के अन्तर्गत रूप, विषय, भाषा तीनों का महत्वपूर्ण स्थान है । औपन्यासिक कला के उपर्युक्त विषयों पर विचार किया जा सकता है ।

कथानक :

सामान्य जीवन की घटनाओं को समग्र रूप में और यथार्थ रूप में प्रस्तुत करना कुशल लेखक का परिचायक है । कुशल लेखक विषय, समाज, इतिहास अथवा राजनीति किसी भी क्षेत्र से कथानक का चुनाव करता है और उसे यथार्थ ढंग से प्रस्तुत भी करता है । हडसन ने विषय के चुनाव के बारे में लिखा है –

> "A Novel is really great only when it lays. Its foundations borad and deep in the things which constantly and seriously appeal to us in the struggle and fortunes of our common humanity."[1]

प्रेमचंद का 'गोदान' और फकीर मोहन का 'छमाँ मणि आठ गुंठ' उपर्युक्त कसौटी पर खरे उतरते हैं । इन दोनों उपन्यासकारों का उपन्यास यथार्थ जीवन की पृष्ठभूमि पर आधारित है । उन्होंने जिन व्यक्तियों का समाज, धर्म-नीति, राजनीति का चित्रण किया है उसके मूल में उनकी यथार्थवादी दृष्टि अन्तर्निहित है । इसी कारण 'गोदान' और 'छमाँ मणि

1- हडसन, इन्ट्रोडक्शन टू दी स्टडी आफ लिटरेचर, पृ0 132

आठ गुंठ' का अपने पूर्ववर्ती उपन्यासों से अलग महत्व है । कथानक में तीन गुणों का रहना आवश्यक माना गया है – रोचकता, संभाव्यता और मौलिकता । अब हम उपर्युक्त तीन गुणों के आधार पर 'गोदान' और 'छर्अ माण आठ गुंठ' का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे ।

कथानक में रोचकता एक आवश्यक गुण है । रोचकता के अभाव से उपन्यास पाठक के मन में अरुचि पैदा करता है । अतः कथानक में रोचकता लाने के लिए उपन्यासकार को कौतुहल विषयों का वर्णन करना पड़ता है । फकीर मोहन और प्रेमचंद ने अपने उपन्यास में अनेक स्थलों पर रोचकता लाने के लिए विभिन्न प्रसंगों की योजना की है । 'गोदान' में होरी की कथा मुख्य कथा है, किन्तु राय साहब की गोबर की मेहता-मालती, खन्ना-गोविन्दी आदि की कथाएँ वर्णित हैं । लेखक विभिन्न कथाओं पर प्रकाश डालता हुआ कथा के अन्त तक पहुँचते हैं और पाठक के मन में रोचकता बनाये रखते हैं । 'छर्अ माण आठ गुंठ' में सारिया-भगिया की कथा मुख्य कथा है । किन्तु इस आधिकारी कथा के साथ फकीर मोहन ने बीच-बीच में बाघसिंह वंश, अछुरदीघी आदि विषयों का वर्णन भी किया है, जिससे पाठकों में रोचकता बनी रहती है । 'छर्अ माण आठ गुंठ' का कथानक गंभीर है किन्तु जब चम्पा ब्राह्मणी के स्वभाव का वर्णन होता है, उस स्थल पर हास्य रस का उद्रेक होता है । फकीर मोहन ने ब्राह्मणी के चरित्र को स्वान के चरित्र से

तुलना कर विद्रुपात्मक हास्यरस की सृष्टि की है —

''× × × × × से कलि शुणि लोकमानि कहन्ति, ब्राह्मणगुड़ाक चाउल मुठाक सकाशी कुकुर पारि कलि कहाकन्ति × × × सेमानंकु कुकुर संगे तुलना कैतेथिले हेले उचित नुहें । उपमाटा मध्य भल हेला नाहिं । कारण प्रेत उद्देश्य रे उत्सृष्ट औदा चाउल सकाशी ब्राह्मणमानंक कलि । आउ कुकुरंक कलि अइंठ भात सकाशि । देखन्तु प्रेत उच्छिष्ट आउ मनुष्य उच्छिष्ट ,औदा चाउल ओ सिझा चाउल, कथाटा केते बाढ़िला × × × आकाशरे शागुणा उड़िले, केउंठारे मढ़ पड़िथिवार जेमति जणाजाए, सेहिपरि दिन पहरक बेले गोसाईंमानि चित्त पवत्र चोब पलमल आचरिले, केउं गारे मनुष्य मरिथिवार सेहि अनुमान करन्ति ।''[1]

प्रेमचंद के उपन्यास में हास्यविनोद का प्रायः अभाव है । 'गोदान' में दातादीन, मातादीन, सिलिया के दर्शन में हास्य के दर्शन होते हैं ।

कथानक की दूसरी विशेषता है सम्भाव्यता । आज का युग विज्ञान का युग है । इसलिए इस आधुनिक युग में पाठक तर्कशील है ।अस्वाभाविक, असंभाव्य घटनाओं में उसका विश्वास नहीं है । अतः उपन्यासकार का कर्तव्य है कि वह जिन घटनाओं को उपन्यास में चित्रित करता है वह वास्तविक भूमि पर आधारित हो । प्रेमचंद और फकीर मोहन के पूर्ववर्ती उपन्यास की कथावस्तु में इस विशेषता का अभाव है । उस समय कौतूहल

1- फकीर मोहन सेनापति - छ माण आठ गुंठ,पृ0 41

वृत्ति से संबंधित असंभव और अस्वाभाविक घटनाओं से उपन्यास की कथावस्तु का निर्माण हुआ था । प्रेमचंद और फकीरमोहन ने जीवन में घटित होने वाली घटनाओं और विषयों को अपने उपन्यास का विषय बनाया । उन्होंने जीवन को यथार्थदृष्टि से देखा था । अतः 'गोदान' और 'छ माण आठ गुंठ' में सम्भाव्यता का निर्वाह हुआ है । यद्यपि इन दोनों उपन्यासकारों ने अपने उपन्यास में नाटकीय घटनाओं का वर्णन किया है किन्तु उसकी स्वाभाविकता पर शंका नहीं की जा सकती । 'गोदान' में मेहता पठान बनकर आता है और 'छ माण आठ गुंठ' में वाधसिंह के घर चम्पा मौसी बनकर जाती है । किन्तु ये दोनों घटनाएं यथार्थस्थिति पर आधारित होने के कारण अस्वाभाविक प्रतीत नहीं होती ।

कथानक का तीसरा गुण मौलिकता है । विषय और अभिव्यक्ति के स्तर पर उपन्यास में मौलिकता देखी जा सकती है । प्रेमचंद और फकीर मोहन के पूर्ववर्ती अधिकांश उपन्यास राजा रानी अथवा कुलीन घर के नायक-नायिकाओं की प्रणय गाथा से पूर्ण होते हैं । इन उपन्यासों में उपन्यासकारों का दृष्टिकोण सामान्य जीवन के विभिन्न रूपों तथा परिस्थितियों के वर्णन का अभाव है । प्रेमचंद और फकीर मोहन के उपन्यास में जिन विषयों का चयन किया गया है उसमें मौलिकता पाई जाती है । उनका उपन्यास सामान्य व्यक्ति के दैनिक जीवन की सामान्य-से-सामान्य समस्याओं को लेकर लिखे गये हैं । जिसका वास्तविकता से गहरा संबंध है ।

जहाँ तक औपन्यासिक कला की दृष्टि से 'गोदान' और 'हर्जे मणि आठ गुंठ' की कथा के प्रारंभ, विकास और अन्त का प्रश्न है प्रेमचंद 'गोदान' में कथा के प्रारंभ, मध्य और अन्त के प्रति सचेष्ट रहे हैं। विभिन्न पात्रों की कथा को विकसित कर अन्त में होरी की मौत से उपन्यास की समाप्ति करते हैं। कमल किशोर गोयनका के शब्दों में — ''गोदान में उपन्यास की कथा जिस बिन्दु से प्रारंभ होती है, वह चक्कर खाकर उसी बिन्दु पर आकर समाप्त होती है। होरी की कहानी प्रोयः गाय की आकांक्षा से प्रारंभ होती है और उसकी मृत्यु भी उसी आकांक्षा के साथ होती है। 'गोदान' का यह कथानक उसके शिल्प कौशल का एक बड़ा प्रमाण है।''[1] 'गोदान' की कथा का प्रारंभ परिणति की ओर संकेत के साथ हुआ है प्रथम परिच्छेद में धनिया कहती है —''जाकर शीशे में मुँह देखो। तुम जैसे मर्द साठे पर पाठे नहीं होते। दूध, घी, अनजन लगाने तक तो मिलता नहीं, पाठे कैसे होंगे।... होरी लकड़ी सँभालता हुआ कहता है.... साठे तक नहीं पहुँचने की नौबत न आने पायेगी धनिया। इसके पहले ही चल देंगे।''[2] वास्तव में होता भी यही है कि होरी निर्धनता, उसकी भर्यदी उसे साठ तक पहुँचने की नौबत नहीं आने देती। उससे पहले ही उसकी मृत्यु हो जाती है।

जहाँ तक फकीर मोहन के 'हर्जे मणि आठ गुंठ' के कथानक के प्रारंभ, विकास और अन्त का प्रश्न है —आलोच्य उपन्यास की परिणति, बीज

1- कमल किशोर गोयनका —प्रेमचंद के उपन्यासों की शिल्पविधि एवं उसका योगदान, पृ0 508

2- प्रेमचंद - गोदान, पृ0 10

गौण किन्तु 'एन्टी क्लाइमेक्स' मुख्य है। भगिया मंगराज के पास 'छह बीघा जमीन' बंधक रखने के उपरान्त कथा परिणति में पहुँचती है। किन्तु उक्त समय तक कथा का विकास गतिहीन रूप में होता है। परिणति के बाद उपसंहार तक उपन्यास की गति जिस तरह द्रुत है उसी तरह मानी स्पर्शी भी। सुरेन्द्र मोहन्ती के शब्दों में -''आलोच्य उपन्यासरे परिणति गौण ; किन्तु प्रतिपरिणति मुख्य। भगिया मंगराजकु 'छअ माण आठ गुंठ' जमी बटकबला लेखि देबा परे गल्प परिणतिरे पहंचिछि। किन्तु सेपर्यन्त गल्पर क्रमपरिणति गतिहीन ओ स्थाणु, बहु अवान्तर प्रसंग ओ बहु दीर्घायित, धैर्यच्युत-कारी वर्णनारे परिपूर्ण। किन्तु परिणति परे उपसंहार पर्यन्त उपन्यासर गति जेमिति द्रुत, सेमिति मर्मस्पर्शी।''[1] इसमें फकीर मोहन ने प्रारंभ में मंगराज का सामान्य परिचय देकर उसके क्रियाकलाप का चित्रण किया है। उससे पात्र की सामान्य स्थिति का ज्ञान तो हो जाता है पर उपन्यास में निहित समस्या अथवा विषय का ज्ञान नहीं हो पाता।

उपन्यास में परिच्छेद योजना का विशेष महत्व होता है। क्योंकि उपन्यास में मुख्य कथा के साथ अनेक गौण कथाएं साथ-साथ चलती हैं। प्रेमचंद के उपन्यास में परिच्छेदों की संख्या दी गई है और फकीर मोहन के उपन्यास में परिच्छेदों की संख्या के साथ-साथ उस परिच्छेद में निहित विषय का शीर्षक भी दिया गया है। परिच्छेदों के शीर्षक से कथा का आभास पहले ही

1- सुरेन्द्र मोहन्ती - पृ0 70

मिल जाता है ।

दोनों उपन्यासकारों ने कथानक के अन्त में मौलिकता का परिचय दिया है । प्रेमचंद और फकीर मोहन के पूर्ववर्ती उपन्यासों की कथा का अन्त सुखद होता था । किन्तु प्रेमचंद और फकीर मोहन यथार्थवादी कलाकार थे । दोनों उपन्यासकारों ने अनुभव किया था कि अच्छे कर्मों का फल सदा अच्छा नहीं होता । अतः 'गोदान' और 'छमाण आठ गुंठ' में होरी सारिया, भगिया अपने सत कर्मों के बावजूद भी दुःख सहते हैं । इसके साथ फकीर मोहन कर्मफल पर भी विश्वास करते हैं । मनुष्य को अपना कर्मफल भोगना पड़ता है । चम्पा को छह बीघा जमीन में अपने कुकर्म का दण्ड सामाजिक स्तर पर समाज की न्याय व्यवस्था में नहीं मिलता, किन्तु अन्त में वह अपना कर्मफल भोगती ही है । सुरेन्द्र मोहन्ती ने लिखा है —''तथापि मनुष्यर ए धर्मदरबार उपरे आउ एक धर्म दरबार अछि, जेउँठी वकील, मुक्तार वा डाक्टर से चरम रायकु अदलि बदलि करि पारन्ति नाहिं । मनुष्यर विचार उपरे तथापि अछि कर्मफल, सेथिरु मनुष्यर मुक्ति नाहिं ; ताहा अलंघनीय । x x x चम्पा पुणि विचारर परिसर भितरकु आसि पारिला नाहिं। एसबु सत्वे कर्मफलर अलंघनीय शास्ति केहि एड़ि पारि नाहान्ति । मंगराज ओ चम्पार कर्मफलर निर्मम चित्रर भीम सौंदर्य, ओड़िया साहित्यरे फकीर-मोहनंक श्रेष्ठतम कृति ।''[1]

1- सुरेन्द्र मोहन्ती-फकीर मोहन समीक्षा पृ० 72

प्रेमचंद और फकीर मोहन से पूर्व तक उपन्यास का उद्देश्य पाठकों का मनोरंजन मात्र करना समझा जाता था। हिन्दी तथा उड़िया के प्रारंभिक युग में उपन्यास का उद्देश्य मनोरंजन करना ही था। उपन्यास को उस युग में गंभीर साहित्य की कोटि में नहीं रखा गया था। लेकिन यह स्थिति उपन्यास साहित्य में प्रेमचंद और फकीर मोहन के आविर्भाव के साथ ही समाप्त हो गयी। दोनों ने उपन्यास का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं बल्कि जीवन से घनिष्ट रूप से संबंधित करके उपन्यास साहित्य को साहित्यिक कोटि में लाकर खड़ा कर दिया।

प्रेमचंद ने उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र माना है। मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों का उद्घाटन करना उपन्यास का मूल तत्व है।"[1] प्रेमचंद ने लिखा है कि उपन्यास में चरित्रों का चित्रण जितना स्पष्ट, गहरा और विकासपूर्ण होगा उतना ही पढ़ने वालों पर उसका असर पड़ेगा। ..... उपन्यास चरित्रों के विकास का ही विषय है। अगर उसमें विकास दोष है, तो वह उपन्यास कमजोर हो जायेगा। कोई चरित्र अन्त में भी वैसा ही रहे जैसा वह पहले था – उसके बलबुद्धि और भावों का विकास न हो, तो वह असफल चरित्र है।"[2]

उपन्यास की समस्त घटनाओं को पात्र ही गति प्रदान करते हैं। पात्र के चरित्र की परख उसकी परिस्थितियों के संदर्भ में ही की जा सकती है। उपन्यासकार अपने पात्रों को विभिन्न परिस्थितियों में रखकर देखता है क्योंकि परिस्थितियाँ पात्रों को प्रभावित करती हैं, उनके अनुरूप ही पात्रों को प्रभावित करती है।

1- प्रेमचंद - साहित्य का उद्देश्य, पृ० 50 - 2- वही, पृ०52

<u>पात्र कल्पना और चरित्र-चित्रण :</u>

उपन्यासकार जिस उद्देश्य से उपन्यास की रचना करता है उसका प्रभाव उसके पात्रों पर अनिवार्य रूप से पड़ता है। फकीर मोहन और प्रेमचंद दोनों उपन्यासकारों की दृष्टि समाज की कुरीतियों पर गयी थी। अतः दोनों उपन्यासकारों का उद्देश्य युगीन समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हुए तत्कालीनसमाज की रूढ़ियों, अंधविश्वासों, सामाजिक, आर्थिक विषमताओं पर कठोर प्रहार करना था। इसलिए प्रेमचंद और फकीर मोहन का उद्देश्य व्यक्ति विशेष का चित्रण करना नहीं था बल्कि अपने समाज का व्यापक चित्र उपस्थित करना था। अतः प्रेमचंद और फकीर मोहन के उपन्यास में सभी वर्गों के प्रतिनिधित्व करने वाले पात्र मिलते हैं। उनके उपन्यास में जमींदार, किसान, पूंजीपति, मजदूर, महाजन, वकील, डाक्टर, अत्याचारी, सरकारी कर्मचारियों का चित्रण हुआ है। उनके उपन्यास में प्रतिनिधि पात्रों को — शोषित वर्ग के प्रतिनिधि पात्र, शोषक वर्ग के प्रतिनिधि पात्र, वैभव प्रेमी वर्ग के प्रतिनिधि पात्र की दृष्टि से देखा जा सकता है।

<u>शोषक वर्ग के प्रतिनिधि पात्र :</u>

'छः माण आठ गुंठ' में रामचन्द्र मंगराज गाँव का जमींदार और महाजन वर्ग का प्रतिनिधि पात्र है। फकीर मोहन ने मंगराज के महाजनी कारोबार के बारे में लिखा है —''मंगराजंक मुँहरु अनेक थर शुणा जाइअछि से केवल परर विपद सहि न पारि धान टंका करज दिअन्ति, नोहिले सेमिरे

सेथिरे तांकर निजर लाभ किछि नाहिं आम्भेमाने कहुं, बरन्च लोकसान । धान देढ़िरु येशि कणा नाहिं, एथिरे लाभ कैं ? हिसाब्ति शुणिला पुरुणा धान, नेवा बेलाकु नुआ कथा × × × बस्त अंक पाजिआ जे सालतमामि दाखल करिथिला, सेथिरे महाजनी कारबार आठटंका ब्याजरा दुइखण्डा दुरु-प्रान्ति काठ तसे पढ़िविवार देखाजाइबि । एसिगुड़ाए टंका छाड़ सबुरी पाजिआ गालिबार जेउँथिरे कैफियत देखायेले, सेथिर सारमर्म एहि - भिकारी पण्डा काम नेवार मूल पचिटंका, सेथिर क्रमन्तर चक्रवृद्धि प्रमाणे चार टंका पांच अणा एगार गण्डा दुइकड़ा । गाए दुइपद सु मोट ओ ~~xxxxx~~ आदाय सतरटंका पचिअणा दुइ पइसा बादि बाकी छाड़ देढ़ गण्डा ।"[1] 'गोदान' में दातादीन ऐसे महाजन हैं जो धर्म का भय दिखाकर, कर्ज देकर अपने धन की दुगनी रकम ले लेते हैं । गोबर दातादीन से कहता है -" मुझे याद है तुमने बैल के लिए तीस रुपये दिये थे । उसके सौ हुए और अब भी सौ के दो सौ हो गये । इसी तरह तुम लोगों ने किसानों को लूट-लूट कर मजूर बना डाला और आप उनकी जमीन के मालिक बन बैठे ।"[2] मंगराज और दातादीन जमींदार और महाजन के अपने-अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

प्रेमचंद ने पूंजीपति और उद्योगपति वर्ग के शोषकों का चरित्र चित्रण किया है, किन्तु फकीर मोहन ने नहीं किया है । 'गोदान' के खन्ना

1- फकीर मोहन सेनापति - छमाण आठ गुंठ, पृ0 मृ0 10

2- प्रेमचंद - गोदान, पृ0 153

पूंजीपति तथा उद्योगपति वर्ग के प्रतिनिधि पात्र हैं। श्रमियों के प्रति उन्हें कोई सहानुभूति नहीं है। प्रेमचंद ने खन्ना के चरित्र पर प्रकाश डालते हुए लिखा है -''केवल एक हजार रुपया महीना लेते थे, कुछ कमीशन भी मिल जाता था, मगर वो इतना लेते थे कि मिल का संचालन भी करते थे। मजूर केवल हाथ से काम करता है। डायरेक्टर अपनी बुद्धि से, विद्या से, प्रतिभा से, प्रभाव से काम करता है। दोनों शक्तियों का मेल बराबर नहीं हो सकता। मजूरों को यह संतोष क्यों नहीं होता कि मंदी का समय है और चारों तरफ बेकारी फैली रहने के कारण आदमी सस्ते हो गये हैं। उन्हें तो एक की जगह पौन भी मिले तो सन्तुष्ट रहना चाहिए।''[1]

प्रेमचंद और फकीर मोहन दोनों ने पुलिस, वकील आदि कर्मचारियों का चित्रण किया है। 'छमाण आठ गुंठ' के दरोगा शेख इनायत हुसैन, वकील राम राम लाला तथा 'गोदान' के दरोगा गंडा सिंह इसी वर्ग के प्रतिनिधि पात्र हैं। 'छमाण आठ गुंठ' में वकील राम राम लाला के चरित्र का चित्रण करते हुए फकीर मोहन ने लिखा है -''शास्त्रे अछि, राजद्वारे श्मशाने च य तिष्ठन्ति सबान्धव। कोहले राजद्वारे कि कचेरिरे, श्मशाने कि मशानिपदारे, तिष्ठन्ति थान्ति, स्वयं स बान्धव अर्थात् वकील मानि कचेरिरे आउ बिलुआमाने मशानिरे थान्ति, समानि बान्धव, केवल जीवनपणे आउ मृतमणे प्रभेद।''[2]

1- प्रेमचंद - गोदान, पृ0 238

2- फकीर मोहन सेनापति - छमाण आठ गुंठ, पृ0 131

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रेमचंद और फकीर मोहन में भारतीय जनता के शोषक पुलिस कर्मचारी वर्ग, किसानों के शोषक जमींदार, महाजन वर्ग का चित्रण किया है। जबकि प्रेमचंद ने उद्योगपति एवं पूंजीपति वर्ग के पात्रों का भी चित्रण किया है, किन्तु फकीर मोहन ने इस शोषक वर्ग का चित्रण नहीं किया है।

<u>शोषित वर्ग के प्रतिनिधि पात्र :</u>

'छ: माण आठ गुंठ' के भगिया-सारिया और 'गोदान' का होरी किसान वर्ग के प्रतिनिधि पात्र हैं। होरी और भगिया-सारिया में किसान वर्ग की सभी विशेषताएं विद्यमान हैं। कृषक भारतीय ग्रामीण व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है। फकीर मोहन और प्रेमचंद युगीन किसान एक ओर जमींदारों के अत्याचारों से पीड़ित था तो दूसरी ओर महाजन भी उसका शोषण कर रहा था। उसकी विपन्नता और विवशताएं 'गोदान' के होरी और 'छ: माण आठ गुंठ' के भगिया-सारिया के व्यक्तित्व में मूर्तिमान हो उठी है। प्रेमचंद होरी की इस शोषित व्यवस्था का वर्णन करते हुए लिखते हैं - ''मैंने नहीं जाना लू कैसी होती है, और माघ की वर्षा कैसी होती है ? इस देह को चीर कर देखो, इसमें कितना प्राण रह गया है। कितना जख्मों से चूर, कितना ठोकरों से कुचला हुआ। उससे पूछो कभी तूने विश्राम के दर्शन किये, कभी तू छाँह में बैठा ?''[1]

1- प्रेमचंद - गोदान, पृ०

प्रेमचंद ने शोषक मजदूर वर्ग का भी चित्रण किया है । गोबर मजदूर वर्ग का प्रतिनिधि है । वह मानसिक तथा शारीरिक पीड़ा से थका है और थकान को दूर करने के लिए ताड़ी शराब पीने लगता है । प्रेमचंद लिखते हैं -''यहाँ देह की मेहनत न होने पर भी जैसे उस कोलाहल, असंगति और तूफानी शोर का उस पर बोझ सा लदा रहता था । .... सभी श्रमिकों की यही दशा थी । तभी ताड़ी या शराब में दैहिक थकान और मानसिक अवसाद को डुबाया करते थे । गोबर को भी शराब का चस्का पड़ा। घर आता तो नशे में चूर और पहर रात गये ।''[1]

वैभव प्रेमी वर्ग के प्रतिनिधि पात्र :

यह उल्लेख किया जा चुका है कि ब्रिटिश शासन काल में शासन के भू-राजस्व आयन-प्रबंधन द्वारा सामाजिक स्थिति बदल गयी थी । समाज में पुरानी जमींदारी के स्थान पर एक नये जमींदार वर्ग का उदय हुआ था । यद्यपि धीरे-धीरे जमींदारों के वैभव के दिन समाप्त हो चुके थे, परन्तु अनन्त काल से भोगे हुए वैभव का झूठा अभिमान उनमें बना हुआ था । ये अपने वैभव प्रदर्शन की भावना को किसी भी प्रकार कम नहीं देखना चाहते थे । 'गोदान' के राय साहब 'कर्ज मणि आठ गुंठ' के शेख दिलदार मियाँ इस वर्ग के प्रतिनिधि पात्र हैं । 'गोदान' में राय साहब ,सूर्य प्रताप से अपने

1- प्रेमचंद - गोदान, पृ0 230

को कम नहीं देख सकते।' जब सूर्यप्रताप सिंह के बंगले इन सभी स्थानों में थे, तो राय साहब के लिए यह लज्जा की बात थी कि उनके बंगले न हों.. हर बंगले के लिये माली, चौकीदार, कारिन्दा, खानसामा आदि भी रख लिये गये।[1] "उन्हें अपनी इज्जत का अभिमान है, ''इलेक्शन का सवाल नहीं है, भाई, यह इज्जत का सवाल है, क्या आपकी राय में मेरी इज्जत दो लाख की भी नहीं। मेरी सारी रियासत बिक जाए, गम नहीं, मगर सूर्यप्रताप सिंह, को मैं आसानी से विजय न पाने दूंगा।''[2] फकीर मोहन ने 'छमाण आठ गुंठ' में शेख दिलदार मियाँ के चरित्र का उल्लेख करते हुए लिखा है— ''आगरे सातजण मोसाहिब भाबनारे बसि दुलाउछन्ति ओस्तादजी खाउसाआँ दुक्गोड़ कुन्दाइ दाढ़िटिकु आँठु उपरे लदिदेइ बसिअछन्ति। x x x मियाँ कहिले, ''से कथा जाउ, एवे इज्जत किमरि रहे ? सम्पत्ति जाउ, महत बाउ। महत गले न मिले आउ।''[3]

इस तरह 'गोदान' के राय साहब और 'छमाण आठ गुंठ' के शेख दिलदार मियाँ में स्पर्धा की भावना अधिक है।

चरित्र-चित्रण करते समय प्रेमचंद तथा फकीर मोहन ने दो तरह की विधियों का अनुकरण किया है – एक प्रत्यक्ष प्रणाली तथा दूसरी परोक्ष प्रणाली। प्रत्यक्ष प्रणाली लेखक स्वयं पात्रों का परिचय देते समय उनके स्वभाव,

---

1- प्रेमचंद - गोदान, पृ० 262

2- वही, पृ० 196

3- फकीर मोहन सेनापति - छमाण आठ गुंठ, पृ० 34

आकृति का वर्णन करता है। अप्रत्यक्ष प्रणाली में पात्रों के आचरण एवं कथोपकथन के द्वारा उसके स्वभाव का उद्घाटन करता है।

प्रत्यक्ष प्रणाली के अन्तर्गत नामकरण पद्धति, वर्णनात्मक पद्धति आती है। वर्णनात्मक प्रणाली में लेखक स्वयं पात्र का वर्णन करता है। पात्रों की आकृति और स्वभाव का वर्णन करता चलता है तथा उनकी चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालता है। प्रेमचंद और फकीर मोहन ने अधिकतर वर्णनात्मक प्रणाली को अपनाया है। 'गोदान' में आधुनिकता मालती की आकृति और वेशभूषा के वर्णन में चंचलता झलकती हुई दिखाई देती है। फकीर मोहन ने 'छ माण आठ गुंठ' में चम्पा का रूप-वर्णन करते समय उसके चरित्र और स्वभाव की सामान्य विशेषताएँ बताई हैं। उन्होंने लिखा है कि -

''अर्ध वक्ष - उत्तोलिनी - मुखकिशाहिनी
कक्षशून्या, रिक्तहस्ता, तुरंगगामिनी,
मार्जारनयना, ताम्रकेशा, अट्टभिता,
स्वाधीनभर्तृका, पतिजन आगे विह्वा,
परपुरुषकु धरि नर्तकी सुन्दरी,
आहा आहा, अपरूप स्वर्गविद्याधरी।''[1]

लेखक प्रत्यक्ष अथवा व्यंग्यात्मक ढंग से पात्रों के नामकरण द्वारा चरित्र की विशेषता प्रकट करते हैं। प्रेमचंद और फकीर मोहन दोनों ने

1- फकीर मोहन सेनापति - छ माण आठ गुंठ,पृ० 3।

कुछ पात्रों के नाम उनकी चारित्रिक विशेषताओं के आधार पर रखे हैं। 'गोदान' में प्रेमचंद ने पात्रों का नामकरण उनके गुणों के विपरीत रखा है। 'गोदान' का दातादीन दीनों को दान करने वाला नहीं है वरन् दीनों का घर लूट लेने वाला महाजन है। गोबर कहता है—''मुझे याद है, तुमने बैल के तीस रुपये दिये थे। उनके सौ हुए और अब सौ के दो सौ हो गये। इसी तरह तुम लोगों ने किसानों को लूट कर मजूर बना डाला और आप उनकी जमीन के मालिक बन बैठे हैं।''[1] फकीर मोहन ने 'छर्अ माण आठ गुंठ' में चम्पा का दूसरा नाम हरकला रखा है। हरकला का अर्थ है हर तरह की कला में निपुण होना। यह उसके चारित्रिक गुण के आधार पर रखा गया है।

प्रेमचंद और फकीर मोहन ने पात्रों के चरित्र-चित्रण में मनो-विश्लेषणात्मक प्रणाली को अपनाया है। 'गोदान' की मालती बाहर से देखने में तितली लगती है, किन्तु अन्तःकरण में उसकी पीड़ा है, उसके चरित्र के रहस्य का विश्लेषण करते हुए प्रेमचंद ने लिखा है—''मालती बाहर से तितली है, भीतर से मधुमक्खी। उसके जीवन में हँसी-ही-हँसी नहीं है; केवल गुड़ खाकर कौन जी सकता है। .... वह हँसती है, इसलिए कि उसे उसके दाम भी मिलते हैं। उसका चहकना और चमकाना इसलिए नहीं है कि वह चमकने को ही जीवन समझती है। उसने निजत्व को अपनी आँखों में इतना बढ़ा

1- प्रेमचंद - गोदान, पृ० 153

लिया है कि जो कुछ करो अपने लिये ही करो । नहीं, वह इसलिए चहकती है और विनोद करती है कि इससे उसके कर्तव्य का भार कुछ हलका हो जाता है । प्रेमचंद की तरह फकीर मोहन के 'छमाण आठ गुंठ' में मनोविश्लेषणात्मक पद्धति का अभाव है ।''[1]

दोनों लेखकों ने पात्रों का चरित्र चित्रण प्रत्यक्ष प्रणाली से करने के साथ ही परोक्ष प्रणाली से भी किया है । इसमें लेखक पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को परिस्थिति या घटना विशेष में डालकर प्रस्तुत करता है ।स्वयं पात्र के आत्मविश्लेषण द्वारा भी चरित्र का उद्घाटन होता है । 'गोदान' में मालती का प्रारंभिक चरित्र उच्छृंखलता और चंचलता से पूर्ण था । किन्तु बाद में वह त्याग और प्रेम की मूर्ति कहलाती है ।उसका कारण परिस्थिति ही है । प्रेमचंद ने उसकी परिस्थितियों का उल्लेख करते हुए लिखा है —
''अब तक जितने मर्द उसे मिले, सभी ने विलासवृत्ति को ही उकसाया ।उसकी त्यागवृत्ति दिन-दिन क्षीण होती जाती,पर मेहता के संसर्ग में आकर उसकी त्याग भावना सजग हो उठी थी । सभी मनुष्यों में यह भावना छिपी रहती है और प्रकाश पाकर चमक उठती है ।''[2]

फकीर मोहन के पात्र भी परिस्थितियों में पड़कर बनते और बिगड़ते हैं । 'छमाण आठ गुंठ' का मंगराज का चरित्र-चित्रण करते हुए

1- प्रेमचंद - गोदान, पृ0 131

2- वही, पृ0

लिखा है –''अर्थात मनुष्यर मन स्वर्गीय औ नारकीय दुइप्रकार वृत्तिरे गठित । स्वर्गीय वृत्ति मनुष्य कु देवत्व रे परिणत करे औ नारकीय वृत्ति राक्षस करिपकाय % x x x x मनुष्य चिरकाल मनुष्य एवं मनुष्य मनर मूल उपादान समानथिलि मध्य बाह्य प्रकृति असामञ्जस्य मय । x x x समय विशेषरे घटनाचक्र परवर्तिरे निद्रित वृत्ति समस्त जागरित होइ उठिबार देखा जाए ।''[1] अतः परिस्थितियों में पड़कर मंगराज का स्वभाव बदलता है । इस प्रकार दोनों उपन्यासकारों ने पात्रों के गुण व दोषों को विकसित करने वाली अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों का उद्घाटन किया है और उसी मान्यता के आधार पर उन्होंने पात्रों के चरित्रों का विकास किया है ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रेमचंद और फकीर मोहन ने 'गोदान' तथा 'छमाण आठ गुंठ' में चरित्र-चित्रण की विभिन्न शैलियों को अपनाकर पात्रों के चरित्र का विकास किया है । दोनों उपन्यासकारों ने पात्रों के नामकरण, ग्रामीण और शहरी जीवन के अनुरूप किये हैं । पात्रों के नामकरण में जाति, वंश आदि का भी ध्यान रखा है । उनके पात्रों के माध्यम से समाज की समस्याओं का चित्र प्रस्तुत होता है ।

1- फकीर मोहन सेनापति - छमाण आठ गुंठ, पृ0 115

भाषा :

हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद और उड़ीया साहित्य में फकीर मोहन की भाषाऔर रचना शैली अपने पूर्ववर्ती उपन्यासकारों से संपूर्ण अभिनव एवं एकांत रूप से मौलिक है। दोनों उपन्यासकारों ने साधारण जनता की भाषा को उपन्यास में प्रयुक्त किया है। प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति ने संस्कृत भाषा की कृत्रिमता से भाषा को मुक्ति दिलाकर हिन्दी तथा उड़ीया भाषा को नवजीवन दिया है। जहाँ तक फकीर मोहन का प्रश्न है उन्नीसवीं शताब्दी में उड़ीया भाषा के बारे में कांतिचन्द्र भट्टाचार्य ने कहा था -''उड़ीया एक स्वतंत्र भाषा नाय।'' ऐसी स्थिति में फकीर मोहन ने उड़ीया भाषा को पुनर्जन्म दिया था। प्रेमचंद और फकीर मोहन ने 'गोदान' और 'छमाँ माण आठ गुंठ' में जनपदीय भाषा को एक नवीन शैली में अभिव्यक्त किया है। 'गोदान' और 'छमाँ माण आठ गुंठ' की भाषा की विशिष्टता उसकी पात्रानुकूलता में निहित है। दोनों उपन्यासों में विभिन्न वर्ग के पात्र हैं, जैसे ग्रामीण नगर निवासी। प्रेमचंद और फकीर मोहन ने सभी प्रकार के पात्रों की भाषा को उनके वर्ग, धर्म, स्वभाव, चरित्र आदि के अनुरूप निर्मित करने में सफलता प्राप्त की है। उन्होंने पात्रों की सामाजिक और शैक्षिक नियति के अनुसार उनकी भाषा में भी परिवर्तन दिखाया है। भाषा की यह स्वाभाविकता उनके चरित्र को यथार्थरूप प्रदान करती है। 'गोदान' की भाषा जिस तरह मुहावरों, लोकोक्तियों और अलंकारों से समृद्ध हुई है, उसी तरह 'छमाँ माण

आठ गुंठ' की भाषा भी उपर्युक्त विशेषताओं से परिपूर्ण है। ग्रामीण पात्रों ने अपने अधिकांश कथनों में मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग किया है।

प्रेमचंद और फकीर मोहन ने विशेष रूप से पात्रों के चरित्र-चित्रण, स्थिति और भावदशाओं के वर्णन तथा उनकी अमूर्त भावनाओं को मूर्त करने के लिए उपमा अलंकार का प्रयोग किया है।

<u>उपमा अलंकार :</u>

'गाय मन मारे उदास बैठी थी, जैसे कोई वधू ससुराल आई हो।'[1]

'हरखू . . . सूखी मिर्च की तरह पिचका हुआ।'[2]

'. ..यह बात उसके पेट में इस तरह खलबली मचा रही थी, जैसे ताजा चूना पानी में पड़ गया हो।'[3]

'पठाण घर तलाकदिया माइकिनिया क परि तानपुराटा एवं पड़ियारे बाइजिबाढि परि तबला दुइटा गडुअछि।'[4]

'महादेवं क ठारे रोगी धारणा देला परि नलटा मियाँक फदस्पर्श करि पड़िअछि।'[5]

1- प्रेमचंद - गोदान, पृ० 36

2- वही, पृ० 208

3- वही, पृ०

4- फकीर मोहन सेनापति - छमाण आठ गुंठ, पृ० 32-33

5- वही, पृ० 33

संस्कृत भाषा के तत्सम शब्दों को अपभ्रंश करके प्रयोग करने की प्रवृत्ति 'गोदान' और 'छमाण आठ गुंठ' के ग्रामीण पात्रों में विद्यमान है । जैसे स्नान, परसाद, गिरस्त, दर्शन तीर्थ, व्रत, सिद्धि निसचिन्त आदि 'गोदान' के ग्रामीण पात्र उच्चारण की सुविधा के अनुसार अपभ्रंश करके प्रयोग में लाये हैं इसी तरह 'छमाण आठ गुंठ' में मणिस, देवता, गेरस्त आदि अपभ्रंश शब्दों का प्रयोग हुआ है । भाषा के साथ 'गोदान' और 'छमाण आठ गुंठ' में व्यंग्यात्मकता शैली भी अपनाई गई है । व्यंग्य का मुख्य उद्देश्य है समाज की दोष-दुर्बलता, अन्याय-अत्याचार, अज्ञान और कुसंस्कार पर तीक्ष्ण आघात करके मनुष्य के सुप्त विवेक को जागृत करना है । सर्वेश्वर दास ने लिखा है –''जेउँमानि पण्डित नहोइ आपणाकु सर्वश्रेष्ठ पण्डित बोली देखाई हुअन्ति, धार्मिक न होई धर्मर मुखा पिन्धी बुलन्ति, दुर्वृत्त नरपिशाच होइ मध्य परोपकारर भान आचरण करन्ति, सेहि पाषाण्ड, धर्मध्वजी, प्रतारक दलर प्रतारणा, छलना, भण्डताकु हास्यबिन्दुपर उज्ज्वल रश्मि-सम्पातरे जनसमाज समक्षरे उद्घाटित करिवा व्यंगयर चरम लक्ष्य ।''[1] मंगराज की धार्मिकता के बारे में फकीर मोहन ने लिखा है –''लोकटि बड़ धार्मिक वर्ष मध्यरे चोबीसटा एकादशी । चालिसटाथिलि मध्य गोटिए जे बाढन्ता, ए कथा आम्भमानि कहिवाकु अक्षम । एकादशी दिन तुलसीपत्र मात्र अवलम्बन । सेदिन

1- सर्वेश्वरदास - युग स्रष्टा फकीर मोहन, पृ0 198

उपरओलि मंगराजंक जगा भण्डारी कथा कहु-कहु कहिपकारला, प्रति एकादशी दिन संजबेले द्वादशी पारणा सकी साआन्तक शोरवा धरे सेरे दुध, किशु खई। नवात पाकलाकदरी रखाजाइथाए। से द्वादशी दिन बढ़िसकाहु कुआ आसन मजि। एकथा शुणि केतेजण मुँह चाहाँ चाहिँ होइ हसिपिले। जणे कहिपकारला – दुबि पाणि पिइले महादेवंक पाप कि जाणिपारिकाही।''[1]

'छअ माण आठ गुंठ' की तरह 'गोदान' की भाषा की व्यंग्यात्मकता एक बड़ी शक्ति है। लेखक ने पात्रों के वर्णन, पात्रों के संवाद में व्यंग्यात्मकता का गुण सर्वत्र विद्यमान है। डा0 इन्द्रनाथ मदान के मतानुसार -''व्यंग्य तो उपन्यास के प्रत्येक अंग में व्याप्त है। उनके मतानुसार शब्द का व्यंग्य है, कहीं कथन का, कहीं स्थिति का, कहीं टीका का है तो कहीं सम्बोधन का।''[2] 'गोदान' में दातादीन अपनी जवानी में स्वयं बड़े रसिक रह चुके थे। मातादीन भी सुयग्य पुत्र की भाँति उन्हीं के पद्चिह्नों पर चल रहा था। धर्म का मूल तत्व है पूजा-पाठ तथा व्रत और चौका-चूल्हा। जब पिता-पुत्र दोनों ही मूल तत्व को पकड़े हुए हैं तो किसी की मजाल है कि उन्हें पथभ्रष्ट कह सकें।"[3]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'गोदान' और 'छअ माण आठ गुंठ' में प्रेमचंद और फकीर मोहन ने भाषा तथा रचना शैली की दृष्टि से औपन्यासिक कला के क्षेत्र में नवीन भाषा तथा शैली का प्रयोग किया है। उनकी भाषा जनता की व्यावहारिक भाषा होने के बावजूद भी उसमें ग्राम्य भाषा

1- फकीर मोहन सेनापति -छअ माण आठ गुंठ, पृ0।
2- डा0 इन्द्रनाथ मदान -गोदान-मूल्यांकन और मूल्यांकन, ,पृ0 200
3- प्रेमचन्द - गोदान -पृ. 206

की लघुता या कुब्जता नहीं है। इसमें उत्कृष्ट कला की विशिष्टता है। औपन्यासिक शिल्प की दृष्टि से 'गोदान' और 'छ माण आठ गुंठ' में प्रायः समानता देखी जा सकती है।

उपसंहार

उपसंहार

प्रेमचंद को हिन्दी तथा फकीर मोहन को उड़िया उपन्यास जगत का कथा सम्राट कहा जाता है। साहित्यिक क्षेत्र में प्रेमचंद का आविर्भाव जिस तरह एक युगान्तकारी घटना थी उसी तरह उड़िया साहित्य में भी फकीर मोहन का आगमन नये मोड़ का सूचक था। दोनों उपन्यासकार अपनी-अपनी भाषा के उपन्यास साहित्य के वे केन्द्र बिन्दु हैं जहाँ से हम उन्हें उनकी पूर्ववर्ती और परवर्ती उपन्यासकारों से अलग देख सकते हैं।

प्रेमचंद का 'गोदान' और फकीर मोहन का 'छअ माण आठ गुंठ' उनके युग का सच्चा इतिहास है। उनके युग की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि परिस्थितियों एवं समस्याओं का चित्रण 'गोदान' और 'छअ माण आठ गुंठ' में हुआ है। सामाजिक क्षेत्र में अंधविश्वास और रूढ़ियों की दास्ता ने भारतीय जीवन को कितना जर्जर, पराधीन और डरपोक बना दिया था, इसका उन्होंने अपने जीवन में अनुभव किया था। अतः प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर इन समस्याओं और स्थितियों का चित्रण वास्तविकता के आधार पर हुआ है। प्रेमचंद ने फकीर मोहन से भिन्न अपने युग के एक नये किसान वर्ग के उदय, शहरी जीवन और औद्योगीकरण के विकास में मजदूरों की स्थिति का चित्रण किया है। जाहिर है कि दोनों लेखकों के उपन्यास उनके युग की परिस्थितियों और समस्याओं का सच्चा इतिहास है। यदि आलोच्य युग का इतिहास लुप्त हो जाए और इन लेखकों की रचनाएँ

शेष रहे तो इन्हीं के आधार पर उस युग की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं आर्थिक परिस्थिति का यथार्थ और पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है ।

प्रेमचंद और फकीर मोहन का 'गोदान' और 'छः माण आठ गुंठ' में कृषक जीवन की दयनीयता, कृषक विवशता तथा असहायता बड़ी मार्मिकता और सजीवता के साथ व्यक्त हुई है । फकीर मोहन की दृष्टि सर्वप्रथम उन ग्रामों पर गई जहाँ किसान निर्धनता से सिसक रहा था, जमींदार और महाजनों के अत्याचारों से जिसकी कमर टूटी हुई थी, तथा अशिक्षा के कारण जो धर्मभीरु और समाजभीरु बन गये थे । फकीर मोहन की तरह प्रेमचंद ने किसानों की दयनीयता, विवशता तथा असहायता का यथार्थ चित्रण किया है । प्रेमचंद ने किसानों को अपने अधिकार के प्रति जागरूक बनाया । फकीर मोहन से प्रेमचंद तक भी जो किसानों की कथा का विकास होता है उसमें एक-दूसरे पर प्रभाव तो नहीं देखा जा सकता, किन्तु फकीर मोहन से प्रेमचंद तक समाज की जो स्थिति रही वह दोनों उपन्यासकारों को किसान जीवन का चित्रण करने को प्रेरित करती है ।

दोनों लेखकों ने 'गोदान' और 'छः माण आठ गुंठ' का विषय व्यक्ति को नहीं समाज को बनाया है । इस दृष्टि से 'गोदान' और 'छः माण आठ गुंठ' सामाजिक उपन्यास हैं । सामाजिक दृष्टि से लिखे जाने के कारण 'गोदान' और 'छः माण आठ गुंठ' के पात्र व्यक्ति प्रधान न होकर

ये विशेष वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रेमचंद तथा फकीर मोहन ने शुष्क सौंदर्यचर्चा और निरर्थक कल्पना जगत के बंधन से साहित्य को मुक्ति दिलाकर, मानव समाज की वास्तव चिन्ता, कर्मयोजना और आदर्श के वास्तविक स्वरूप निर्मित किया है। दोनों उपन्यासकारों ने पहलीबार मानव-जीवन से साहित्य का संबंध जोड़ा। प्रेमचंद ने लिखा है ''मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र समझता हूँ।'' फकीर मोहन ने भी साहित्य को राज-परिवार या राज-शक्ति से साधारण-परिवार या प्रजा-शक्ति के धरातल पर उतार लाये। फकीर मोहन ने लिखा है -''प्रकृतरे मुँ सर्वदा प्रजासाधारणकर पक्षपाति, सेमानि लोकसमाजर मेरुदण्ड, सेमानंक शुभाशुभ रे देशर उन्नति ओ अवनति निर्भर करे। आउ प्रजाशक्ति राजशक्ति रूप वृक्षर चेर स्वरूप। चेरहिं वृक्षर जीवनोपायर एकमात्र अवलम्बन एवं सहाय। राजशक्तिर उपासकमानि प्रजाशक्तिकु उपेक्षाकरि राजा ओ प्रजार प्रजा उभय पक्षर परमशत्रु हुअन्ति।''[1]

प्रेमचन्द तथा फकीर मोहन ने जिन चरित्रों का चित्रण किया है वे सब कल्पना-प्रसूत नहीं हैं। उनके उपन्यासों के पात्र हमारे चारों ओर विचरण करने वाले प्राणी हैं। सर्वेश्वरदास ने फकीर मोहन सेनापति के पात्रों के बारे में लिखा है -''समयर रक्त संकित ग्रहण करि जेउँ मानि चित्रि

1- फकीर मोहन सेनापति - आत्मजीवन चरित, पृ0 94-95

चिरवंचित, लंछित, निष्पेसित, जेउँमानंक देहर झाल, छातिरबल ओ हातर मेहनत रे कोटिक जीवन परिपुष्ट सेमानंकु समस्ते देखि मध्य देखि न थिले चिन्ही मध्य चिन्ही न थिले । मानविक्तार अनंत ऐशर्यर अधिकारी होइ सेमानेथिलि एकान्त निःसम्बल , निःसहाय, अनादर, अवहेला, उपेक्षा ओ जुगुप्सार आवर्जना स्तूपतलु तोलि आणि फकीर मोहन सेमानंकु साहित्यर मणिमय मण्डपेर स्थान देले x x x x x सेहि दीन, दुःखी, कांगाल, हतभाग्य दलंकु बगिदवीर्क सिंहासनरे स्थापन करि फकीर मोहन ओड़िया साहित्यरे अभिनव सरणी खोलिदेले ।''[1] उनकी दृष्टि में कोई मानव दोष-मुक्त नहीं है । ये पात्र साधारण मानवीय भावनाओं, दोष-दुर्बलताओं से परिपूर्ण हैं । ये पात्र देवगुणों से नहीं बल्कि मानवीय गुणों जैसे , ईर्ष्या, द्वेष, प्रेम आदि से युक्त हैं । उनकी दृष्टि में मानवीय मन दो प्रकार की वृत्ति से गठित है — एक है स्वर्गीय वृत्ति, दूसरी है नारकीय वृत्ति । स्वर्गीय वृत्ति मनुष्य को देव बनाती है और नारकीय वृत्ति मनुष्य को राक्षस बनाती है । घटनाचक्र के परिवर्तन में विभिन्न परिस्थितियों का मानव-मन पर जो प्रभाव पड़ता है ,उसी के अनुरूप वह व्यवहार करता है ।अतः उनका उपन्यास साहित्य व्यक्ति के एकक जीवन का प्रतिबिम्ब नहीं है ।व्यक्ति के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों के संघर्ष की प्रतिध्वनि 'गोदान' और 'छमाण आठ गुंठ' में हुई है ।

1- अध्यापक सर्वेश्वरदास - युगस्रष्टा फकीर मोहन,पृ0 236

प्रेमचंद और फकीर मोहन अपने-अपने युग के युगान्तकारी उपन्यासकार हैं । हिन्दी में प्रेमचंद के उपन्यासों का काल प्रेमचंद युग नाम से प्रसिद्ध है । इसी तरह कुछ आलोचक फकीर मोहन के उपन्यासों के काल को उड़ीया साहित्य में फकीर मोहन युग कहते हैं । दोनों उपन्यासकारों की प्रासंगिकता यह है कि प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति की भाषा शैली, विषय-वस्तु आदि का उनके परवर्ती उपन्यासकारों ने अनुशरण किया है । हिन्दी में डा० विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', भगवतीप्रसाद वाजपेयी और शियाशरण गुप्त ने प्रेमचंद की भाषा-शैली और विषय-वस्तु का अनुशरण किया था । फकीर मोहन की भाषा-शैली और विषय-वस्तु का गोपालचन्द्र राय प्रहराज, कालिन्दी चरण पाणिग्राही (माटिर मणिष), नित्यानंद महापात्र (हिड-माटि), गोपीनाथ महान्ति (परजा) (माटिरमटाल) ने अनुशरण किया है । स्वयं गोपाल राय प्रहराज ने उल्लेख किया है कि -''गद्यरे मुं मो क्षुद्र शक्ति अनुसारे तांकरि (फकीर मोहन) खाण्टि सरल ओड़िया भाषाकु अनुसरण करिथिलि (आम घरर हालचाल)।''[1]

उपर्युक्त विशेषताओं ने फकीर मोहन और प्रेमचंद को अपने युग का उच्चकोटि का उपन्यासकार का पद प्रदान किया है । फकीर मोहन पहले भारतीय उपन्यासकार हैं, जिन्होंने सर्वप्रथम किसानों के जीवन का अध्ययन किया था । उनसे पहले किसी भी भाषा में ऐसा कोई लेखक नहीं हुआ

See the novel Govind Samanta by Lal Behari Day of 1876

1- अध्यापक खगेन्द्र नाथ मलिक - कथासम्राट फकीर मोहन, पृ० 169 से उद्धृत ।

जिसने किसानों के जीवन और समस्याओं का चित्रण किया है । किन्तु काल तथा परिस्थितियों के कारण 'गोदान' में जितनी सजीवता तथा अद्भुत कुशलता से किसानों के जीवन और समस्याओं का चित्रण किया गया है, उतना विस्तृत वर्णन फकीर मोहन के 'छमाँ मणि आठ गुंठ' में नहीं हो पाया है । इसके बावजूद भी प्रेमचंद और फकीर मोहन का 'गोदान' और 'छमाँ मणि आठ गुंठ' अपनी-अपनी भाषाओं में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं । उनके इस महत्व का कारण उनके उपन्यासों में निहित विषय की सत्यता, जीवन की विविधता तथा अभिव्यक्ति की सरलता है । इन्हीं गुणों ने दोनों उपन्यास तथा उनके लेखकों को अपनी भाषा के औपन्यासिक साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है ।

—

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

क- हिन्दी उपन्यास

1- श्रीनिवास दास	:	परीक्षागुरु , संस्करण, 1952
2- देवकीनंदन खत्री	:	चन्द्रकान्ता, संस्करण, 1961
3- प्रेमचंद	:	वरदान, संस्करण, 1962
	:	सेवासदन, संस्करण, 1961
	:	रंगभूमि, संस्करण, 1961
	:	कायाकल्प, संस्करण, 1961
	:	गोदान, संस्करण

ख- उड़िया उपन्यास

1- उमेशचन्द्र सरकार	:	पद्ममाली, संस्करण
2- रामशंकर राय	:	विवासिनी
3- फकीर मोहन सेनापति	:	छअ माण आठ गुंठ
	:	मामु
	:	लछमा
	:	प्रायश्चित

ग- सहायक ग्रंथ सूची

(हिन्दी)

1- एस0 एन0 गणेशन	:	हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन (पाश्चात्य उपन्यास से तुलना सहित) प्रथम संस्करण, 1962

2- दयानंद पाण्डेय (सम्पा0): प्रेमचंद व्यक्तित्व और रचना दृष्टि, प्रथम संस्करण, 1970 ।

3- सुभद्रा : हिन्दी उपन्यास : परंपरा और प्रयोग, प्रथम संस्करण, 1974

4- मदन गोपाल : कलम का मजदूर प्रेमचंद, द्वितीय संस्करण, 1984।

5- महेन्द्र भटनागर : समस्यामूलक उपन्यासकार, संस्करण, 1982

6- मुकुन्द द्विवेदी : हिन्दी उपन्यास : युग चेतना और पाठकीय संवेदना, संस्करण, 1970 ।

7- रामचन्द्र शुक्ल : हिन्दी साहित्य का इतिहास, ग्यारहवाँ संस्करण ।

8- रामदरश मिश्र : हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा, द्वितीय संस्करण ।

9- हजारी प्रसाद द्विवेदी : हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास, संस्करण, 1982

10-प्रेमचंद : कुछ विचार

11-प्रेमचंद : साहित्य का उद्देश्य

12- चन्द्रनाथ मदान : मूल्यांकन और मूल्यांकन

(उड़ीया)

1- वृन्दावन बेहेरा : उड़ीया उपन्यास

2- नटवर सामंत राय : प्रकृति आधुनिक ओड़िया साहित्यर भित्ति भूमि, संस्करण, 1981

3- सर्वेश्वरदास : युगद्रष्टा फकीर मोहन, सप्तम संस्करण

4- सुरेन्द्र महन्ति : फकीर मोहन समीक्षा

5- बगेन्द्र नाथ मलिक : कथा सम्राट फकीर मोहन, संस्करण, 1980

पत्रिकाएँ :

1 आलोचना (त्रैमासिक) ,सम्पादक डा0 नामवर सिंह

—